प्र थ म अ ध्या य

ऐतिहासिक हिंदी साहित्य और शिवचरित्र ।

इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास ।

कल्पना का ऐतिहासिक उपन्यास में स्थान ।

ऐतिहासिक हिंदी उपन्यास के उद्देश्य ।

ऐतिहासिक हिंदी उपन्यास के विशेषा ।

उपन्यासकारों की दृष्टि से शिवाजी का व्यक्तित्व ।

ऐतिहासिक हिंदी साहित्य और शिवचरित्र :

छत्रपति शिवाजी महाराज हमारे ऐतिहासिक राष्ट्रपुरुष हैं। हिंदी साहित्य में आजतक अनेक विधाओं में इनका चरित्र लिखने का प्रयत्न हुआ है। काव्य, नाटक, कहानी, जीवनी और उपन्यास के रूपमें ऐतिहासिक हिंदी साहित्य है। लेकिन हमारा विवेचन सिर्फ उपन्यास तक सीमित होने के कारण हम अन्य विधाओं का विवेचन नहीं करेंगे। मराठी साहित्य में जितने उपन्यास शिवाजी पर मिलते हैं, उतने हिंदी साहित्य में नहीं मिलते। फिर भी हिंदी उपन्यासकार शिवाजी का चरित्र-चित्रण किन-किन गुणों से करते हैं यही हमारे विवेचन का विषय है।

छत्रपति शिवाजी महाराज ऐतिहासिक राष्ट्रपुरुष हैं। हिंदी साहित्य में १५० से अधिक साहित्य कृतियाँ छत्रपति शिवाजी पर लिखी गई हैं। छत्रपति शिवाजी पर आठ उपन्यास कृतियाँ लिखी गई हैं। छत्रपति शिवाजी ने महाराष्ट्र का निर्माण किया लेकिन वे महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रह गये। विभिन्न भाषाओं में शिवाजीपर साहित्य निर्माण हो गया है। हिंदी उपन्यासकारों के सामने संसार के अनेक विषय होते हुए भी शिवाजी का चित्रण क्यों करते हैं ? इस चित्रण के माध्यम से उपन्यासकार क्या कहना चाहते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर के लिए सिर्फ हिंदी उपन्यास साहित्य में छत्रपति शिवाजी के चरित्र का सूक्ष्मता से अध्ययन करने से काम नहीं चलेगा। इससे पहले हमें यह देखना होगा कि इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य का क्या संबंध होता है ? अत: हम पहले इतिहास और उपन्यास साहित्य का संबंध देखगें।

इतिहास और साहित्य :--

अनेक भाषाओं में शिवाजी पर इतिहास ग्रंथ होते हुए भी हिंदी

साहित्य में उपन्यास लिखने की क्या आवश्यकता थी ? क्या उपन्यासकार अलग ढंग से शिवाजी का चरित्र कहते हैं ? इसका कारण यह है कि इतिहासकार की कुछ सीमाएँ होती हैं । कुछ बंधन होते हैं उन बंधनों का इतिहासकार को पालन करना पडता है । उपन्यासकार को इन नियमों का पालन नहीं करना पडता । वह खुद को नियमों के बंधन में बाँधना नहीं चाहता । अत: इतिहास न लिखकर साहित्य की ओर प्रवृत्त होता है ।

इतिहास का शाब्दिक दृष्टि से अर्थ है -- " ऐसा ही था " या " ऐसा ही हुआ " इस दृष्टि से अतीत के किसी भी वास्तविक विवरण को ' इतिहास ' की संज्ञा दी जा सकती है ।" [१] इतिहास घटनाओंपर आधारित होता है । और घटनायें सत्य होती है । इसमें कल्पना का स्थान न होने के कारण वह पाठकों को प्रभावित नहीं करता । लेकिन साहित्यकार अपनी कल्पना का प्रयोग साहित्य में करता है । एक निर्जीव इतिहास को वह कल्पना के माध्यम से सजीव बनाता है । साहित्यकार सरस साहित्य का निर्माण करता है और पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है ।

इतिहासकार और साहित्यकार में फर्क होता है । " इतिहासकार द्रष्टा होता है और साहित्यकार सृष्टा । इतिहासकार सिर्फ द्रष्टा होने के कारण जो कुछ वह देखता या जानता है इससे हमें परिचित कराता है । लेकिन साहित्यकार सृष्टा होने के कारण जो विद्यमान है उसकी ओर वह इंगीत करता हो है, साथ ही जिसकी संभावना होती है उसकी भी जानकारी देता है । इतिहास सतहपर चलनेवाली लहर की भाँति होता है, जो वस्तु की गहराई तक नहीं पहुँच पाता । साहित्य दूसरी तहतक जाकर उसकी सुक्ष्मताओं तक परिचय प्राप्त कराता है, इसी कारण अधिक स्पष्ट होता है ।" [२]

उपन्यासकार इतिहासकार से थोडा आगे चलता है । उपन्यासकार कल्पना का सहारा लेता है । " ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का अधिक्य रहता है किन्तु इस कल्पना का आधार भी ऐतिहासिक सत्य

ही होता है । मुख्यत: इतिहास है बाद में उपन्यास ।"[३]

इतिहासकार सत्य को छोडना नहीं चाहता । लेकिन प्रश्न यह निर्माण हो जाता है कि क्या इतिहासकार का सत्य अंतिम सत्य होता है ? अगर नहीं तो उपन्यासकार को एक कदम आगे बढने की इजाजत होनी चाहिए । आचार्य चतुरसेन शास्त्री यह नहीं मानते कि साहित्यकार को ऐतिहासिक सत्य जानना चाहिए । आ.चतुरसेन शास्त्री जी लिखते हैं ...." ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के पहले ऐतिहासिक विशेष सत्यों को जानना चाहिए परन्तु यदि वह ऐसा करे तो वह कदापि कोई रचना जीवन में नहीं कर सकता क्योंकि ऐतिहासिक सत्य का ज्ञान कभी पूरा नहीं हो सकता । उनमें शोध करनेवाले विद्वानोंसे हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं । फिर क्यों न साहित्यकार अपनी कल्पना और उपन्यास की चिर सत्य के आधारपर, जिसमें संशोधन की कोई गुंजाइश नहीं, रचना करे ।"[४]

आचार्य चतुरसेन का कहना नहीं कि साहित्यकार को ऐतिहासिक सत्य का पालन नहीं करना चाहिए । साहित्यकार को प्रचलित सत्य की रक्षा करनी चाहिए । क्योंकि साहित्य में सत्याभास होता है और सत्याभास में कल्पना की उडान आवश्यक है । कलाकृति की निर्मिति में जितनी स्वतंत्रता है उतनी स्वतंत्रता इतिहास की हानि न करते हुये वह ले सकता है ।

कल्पना का ऐतिहासिक उपन्यास में स्थान :

ऐतिहासिक उपन्यास में कल्पना का स्थान क्या हो ? सत्य का स्थान क्या हो ? ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, क्योंकि इतिहास में प्रत्यक्ष घटनात्मक सत्य महत्वपूर्ण होता है और साहित्य में संभवनीय सत्य भी चल सकता है । अगर साहित्यकार को इतिहास के कठोर सत्य पर ही चलना है तो वह एक साहित्यिक कृति न होकर इतिहास ग्रंथ हो जाएगा । दूसरी ओर ऐतिहासिक सत्य को छोडकर चले तो वह इतिहास की हानि करेगा । साहित्यकार के लिए यही एक मार्ग है कि वह ऐसे व्यक्ति और घटनाओंका चित्रण कल्पना से

करके ऐतिहासिक साहित्य सरस बना सकता है ।

कल्पना क्या है ? कल्पना का आधार क्या है ? यह देखना आवश्यक है । बी. एम. चिंतामणि कल्पना का विवेचन करते समय लिखते हैं कि " .... कल्पना वह मानसिक प्रक्रिया है जिस द्वारा हम लोग गत अनुभवों के आधारपर मानस पटलपर एक नूतन चित्र खींचते हैं । कल्पना गत अनुभवोंका नया स्वरूप है ।" [५]

किसी भी वस्तु की कल्पना बिना आधार की नहीं हो सकती । प्राचीन साहित्य में पुष्पक विमान की कल्पना का वर्णन कवियों ने पंछियों की उडान से की है । अगर कवियों ने पंछियों को न देखा होगा तो विमान की कल्पना उनके मानस में न पैदा होती ।

" ऐतिहासिक उपन्यासकार का विवेक वैसा ही होना चाहिए, जैसा कि इतिहासकार का होता है । उसे समझाना चाहिए कि कौनसी सामग्री का मूल्य अधिक और किसका कम है ।" [६]

कल्पना का प्रयोग करने के लिए साहित्यकार को दुसरा एक स्थान उपलब्ध होता है । इतिहासकार इतिहास के प्रमुख पात्रों का सिर्फ निर्देश करता है, उनके मन के भावों को नहीं कहता । यहाँ साहित्यकार अपनी कल्पना से पात्रों के मन के भावों को प्रकट कर सकता है । यहाँ कल्पना का पूर्ण अवसर उसे मिलता है । आगरा में शिवाजी बंदी बन गये थे, इतिहासकार इतना ही कहता है मगर साहित्यकार उनके मन के भावों को प्रकट करता है ।

ऐतिहासिक उपन्यास के उद्देश्य --

मानव मनमें अतीत के बारेमें प्रेम होता है । मानव अतीत के नायक की कल्पना करके आनंदी हो जाता है । अत: उपन्यासकार इस प्रवृत्ति को तृप्त करने के लिये ऐतिहासिक उपन्यास की निर्मिति करता है ।

उपन्यासकार अतीत का पुननिर्माण करना चाहता है । इसी भावना से प्रेरीत होकर वह ऐतिहासिक साहित्य निर्माण करना चाहता है । इस संदर्भ में डॉ. धनजंय लिखते हैं ....." इतिहास और साहित्य दोनों अतीत की घटनाओं की व्याख्या अपने ढंग से करते हैं । साहित्य घटना में कुछ अर्थ खोजने की चेष्टा करता है । उसके पीछे की परिस्थितियों का पता लगाकर उसे सम्बद्ध करता है । वह युग और समाज अपनी सभी विशेषताओं के साथ इसमें प्रतिबिंबित हो उठता है । सही अर्थों में अतीत का पुननिर्माण साहित्य द्वारा ही होता है ।" ७

ऐतिहासिक उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करते समय डॉ. रामनाराण-सिंह "मथुर" लिखते हैं ....." ऐतिहासिक उपन्यास लेखन इतिहास के माध्यम से समाज या राष्ट्र की समस्याओं को भी उपन्यास में उठाता है । ऐतिहासिक यथार्थ को लेकर उपन्यासकार ऐसे चरित्र का निर्माण करना चाहता है, जो समाज को प्रेरणा प्रदान कर सके तथा उस समय की परिस्थितियों को उभारकर इस ढंग से रखना चाहता है कि जिसके परिणामों के आधारपर हम वर्तमान समाज को उसके दोषों तथा दुर्बलताओं से बचा सकें ।" ८

हमारे चरित्र नायक शिवाजीपर इतना अधिक साहित्य क्यों लिखा गया है ? इस प्रश्न का उत्तर मिलता है -- साहित्यकार राष्ट्रीय महत्व के उद्देश्य से राष्ट्र के महापुरुषों, क्रिया-कलापों का चित्रण करना चाहता है । शिवाजी महापुरुष थे । नैतिकता, वीरता, राष्ट्रीयता उदारता, देशप्रेम, मातृप्रेम आदि गुणों की शिक्षा देने के लिए साहित्यकारों ने नई पीढ़ि के सामने आदर्श रूप में शिवाजी का चरित्र रखने का प्रयत्न किया है । परिणामत: इतनी अधिक मात्रा में साहित्य निर्मिति हो गई है । व्यक्ति और राष्ट्र के मध्य सामजंस्य स्थापित करके साहित्यकार राष्ट्रीय भावना जागृत करना चाहता है ।

ऐतिहासिक उपन्यास के विशेषता :--

ऐतिहासिक उपन्यास सफल होने के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं ....

(१) जिस युगपर आधारित उपन्यासकार उपन्यास निर्माण करना चाहता है उस युग के वातावरण से तादात्म्य प्राप्त कर लेना चाहिए ।

(२) उपन्यासकार को ऐतिहासिक सत्य का पालन करना चाहिए ।

(३) ऐतिहासिक चरित्र के नायक का व्यक्ति-चित्रण प्रभावशाली होना चाहिए ।

(४) ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में लोगों के मनमें जो धारणाएँ हैं उन्हें बदलने का या उसके विपरित चित्रण करने का अधिकार उपन्यासकार को नहीं होता ।

(५) काल्पनिक प्रसंग ऐतिहासिक सत्य को हानि पहुँचाने वाले न हो ।

(६) सफल चरित्र-चित्रण और उस युग के वातावरण का सत्याभास करने के लिए उचित भाषा का प्रयोग करना आवश्यक है ।

इन्हीं विशेषाताओं के कारण ऐतिहासिक उपन्यास श्रेष्ठ बनता है, वह पाठकों को आनंद देता है तथा पाठकों को नई प्रेरणा भी दे सकता है ।

इस तरह हम देखते हैं कि उपन्यासकार ही ऐतिहासिक चरित्र नायक का धवल यश लाकर आज की समस्याएँ सुलझाने में सहयोग देता है ।

उपन्यासकारों की दृष्टि से शिवाजी का व्यक्तित्व :--

कवि और नाटककारों की तरह उपन्यासकारों ने शिवाजी व्यक्तित्व के बारेमें विस्तार से चित्रण नहीं लिखा है । यादवचंद्र जैन जी का किया हुआ चित्रण सुंदर और सफल ढंग से हो चुका है । उनका किया हुआ वर्णन

मर्मस्पर्शी लगता है । वे मानते है कि शिवाजी स्वातंत्र संग्राम के उन्नायकों में प्रथम है । जैन जी लिखते है .... " भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के प्रथम उन्नायको में छत्रपति शिवाजी का नाम अग्रगण्य है ।"[९]

यादवचंद्र जैन यह मानते है कि शिवाजी में कुछ दैवी गुण थे, जिन गुणों के कारण वे जनप्रिय बन गये । उसीप्रकार राजनीति, रणनीति की शिक्षा इन्ही गुणों के कारण प्राप्त कर सके ।

" शिवाजी में कुछ दैवी गुण विद्यमान थे जिन्होंने उन्हे जनप्रिय बनाया हो, साथ ही साथ जन-जन के जागरण, सहित उनके राजनीतिक तथा सामाजिक शिक्षाण के लिये एक शिक्षक का-सा कार्य भी उनसे सम्पन्न कराया ।"[१०]

यादवचंद्र जैन जी ने पहले अवतरण में किया हुआ वर्णन शिवाजी के व्यक्तित्व का सही वर्णन है । लेकिन शिवाजी के कर्तृत्व का सही वर्णन जैन जी नहीं कर सके । यादवचंद्र जैन जी ने शिवाजी में दैवी गुण होने का चित्रण किया है । लेकिन इससे शिवाजी के कर्तृत्व की हानि होती है । प्रयत्न से ये गुण प्राप्त होते है, ऐसा चित्रण करने से उस चरित्रमें दूसरों को प्रेरणा देने की शक्ति रहती है । हिंदी उपन्यास साहित्य में यादवचंद्र जैन जी ने अन्यों की तुलना में अच्छा चित्रण किया है ।

..

संदर्भ

१. डॉ.रामनारायणसिंह 'मधुर' - हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास - पृ.१७, कानपुर, १९७१ ई. ।

२. डॉ.धनजंय - हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व - पृ.२९, इलाहाबाद, १९७० ई. ।

३. डॉ.रामनारायणसिंह 'मधुर' - हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास - पृ.१९, कानपुर, १९७१ ई.।

४. आचार्य चतुरसेन शास्त्री - वैशाली की नगरवधु का प्रस्ताक्ना ।

५. बी.एम.चिंतामणि - ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य - पृ.१०१, वाराणसी, १९५९ ई. ।

६. आलोचना - उपन्यास विशेषांक - अक्टूबर, १९५४ ई. ।

७. डॉ.धनजंय - हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व - पृ.३०, इलाहाबाद, १९७० ई. ।

८.डॉ.रामनारायणसिंह 'मधुर' - हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास - पृ.१०, कानपुर, १९७१ ई.।

९. यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ.दो शब्द - दिल्ली, १९५९ ई. ।

१०. यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ.दो शब्द - दिल्ली, १९५९ ई. ।

द्वितिय अध्याय

हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी का चरित्र चित्रण --

बहिरंग चित्रण --

(१) आकृति - वेश - भूषा वर्णन ;
बालरूप, किशोर रूप, युवकरूप, प्रौढ रूप,
वेश भूषा वर्णन, मूल्यांकन ।

(२) स्थित्यंकन तथा क्रिया प्रतिक्रिया का चित्रण :

(३) अनुभाव चित्रण

(४) मूल्यांकन

अंतरंग चित्रण --

(१) शिवाजी के श्रद्धास्थान और प्रेरणा - स्त्रोत -
श्री भवानी, श्री महादेव, माता जीजाबाई, पिता शहाजी

(२) गुरुभक्ति --
माता जीजाबाई, दादोजी कोंडदेव, श्री समर्थ रामदास,
संत तुकाराम, मूल्यांकन ।

(३) बचपन और शिक्षा --
बचपन, शिक्षा, मूल्यांकन ।

(४) वाणी --

(५) वात्सल्य -

(६) दूरदृष्टि -

(७) कार्यक्षमता -

(८) संघटक -

(९) स्वाभिमान - बीजापुर दरबार, आगरा दरबार ।

(१०) स्वधर्माभिमान (हिंदुत्व) :

धर्म और संस्कृति उद्धारक, हिंदू संघटक, हिंदू रक्षक ।

(११) धार्मिक उदारता

(१२) वीरता -

(१३) रणनीति -

भेदनीति, सावधानता, सैनिक का भाई, कठोर अनुशासन, रणनीति चातुर्य, वेशांतर की बात ।

(१४) धाक --

बीजापुर, अमीरोंपर, औरंगजेबपर धाक ।

(१५) नैतिकता --

सदाचार रक्षक, मातृवत पर स्त्री का सम्मान, अबला रक्षक, प्रशंसा ।

(१६) राष्ट्रभक्त --

गुलामी से नफरत, मातृभूमि रक्षक, जातिय आंदोलन नहीं राष्ट्रीय आंदोलन निर्माता ।

(१७) श्रेष्ठ शासक शिवराय --

अत्याचार विरोधी, धर्म निरपेक्ष शासक, चतुर शासक, मनुष्य परीक्षा, न्यायी शासक, प्रशंसा ।

(१८) कार्य ---

(१९) कीर्ति --

हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी का चरित्र-चित्रण --

बहिरंग चित्रण

आकृति-वेश-भूषा वर्णन :

उपन्यासकारों का ध्यान आकृति वेशभूषा वर्णन पर अधिक है । ऐतिहासिक हिंदी उपन्यास साहित्य में छत्रपति शिवाजी का चरित्रचित्रण वेशभूषा के चित्रण से करने का प्रयत्न किया है । चरित्र नायक की आकृति-वेश-भूषा के सफल वर्णन से नायक की एक मूर्त आकृति पाठकों के सामने खडी होती है । अत: चरित्र चित्रण में इसका महत्व अधिक होता है । चरित्र नायक का चित्रण प्रभावी बनाने के लिए यह वर्णन आवश्यक होता है ।

बालरूप --

हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी की बाल्यावस्था का चित्रण किया है । उपन्यासकार परमेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं कि इस बालक में इतना आकर्षण था कि संत तुकाराम बाबा भी इस बालक को गोदमें लेकर पुचकारने के लिए आतुर होते हैं । " दादा कोणदेव ने ' शिशु शिवा ' को उनकी गोद में रख दिया । शिशु के अद्भुत एवं दिव्य रूप को देखकर संत बाबा मुस्कराने लगे और उसे रामकृष्ण कहकर पुचकारने लगे ।" १

उपन्यासकार डॉ. भगवतीशरण मिश्र छत्रपति शिवाजी के बाल्यावस्था चित्रण करते समय लिखते हैं ---..." नवजात शिशु का सम्पूर्ण शरीर कपडे में ढका था पर मुख-प्रदेश पूरी तरह खुला हुआ था । मुख की असामान्य चमक और अप्रतिम तेज से दादा अभिभूत हो आए । माँ की गोद में आते ही शिशु में कुछ ज्यादा ही गतिशीलता आगई थी और उसने हाथ-पांव चलाने शुरू कर दिए थे । दादा ने देखा, सामान्य नहीं था यह शिशु । एक माह का बालक अभी

ही इतना दृष्ट-पुष्ट था कि एक वर्ष के बच्चे के सदृश प्रतीत होता था । खुलती-मुदती सुंदर दीर्घ आँखे अभी ही जैसे सारे परिवेश से परिचित हो जाने को व्यग्र थी । अत्यन्त प्रशस्त ललाट और उससे लगी लम्बाकार उन्नत नासिका बालक को भावी शासक के रूप में प्रत्यक्ष साक्षी थे ।" [२]

किशोर रूप --

शिवाजी के मोहक किशोर रूप का वर्णन करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं...." लम्बे गोरे मुँह पर कटे आम सी बडी बडी फाँकोंसी आँखें, लम्बी ठोडी को दाबकर मुस्कराते ओठ और ओठोंसे निकलने वाली मिठास भरी बातें बडी भली लगती थी । वे सभी को पहली भेट में मोह लेते थे ।" [३]

शिवाजी के किशोर रूप का वर्णन करते समय भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं ..... और उस दिन गजब हो गया था । शिवा सबेरे से ही कही जाने की तैयारी कर रहा था । अपने प्रिय घोडे को तैयार कराया था । कमर में एक ओर तलवार और एक ओर कटार लटकाई थी और आकर माँ के चरण छुए थे । सोलह वर्ष के अपने पुत्र को आज इसतरह किसी अभिमान में निकलने को तैयार देख जीजा का मन पुलकित तो अवश्य हो आया था पर वह कुछ समझ नहीं पाई थी ।" [४]

युवक रूप --

शिवाजी के युवक रूप का वर्णन करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं ..." तभी सामने से एक मुस्कराता - नाटा सा मराठा जवान -- तलवार कमर में बाँधे,मुगलिया सरदारों की सी दाढी बढाये, गोरा - चिट्टा ,माथे पर होली का गोल टीका लगाये सरदारों की सी पगडीनुमा साफा बाँधे सामने आया ।"[५]

शिवाजी के इसी यौवनपूर्ण रूप का वर्णन करते समय एम.के.पाध्ये लिखते हैं ....

" अश्वारोही कोई बत्तीस-तैंतीस साल का होगा । बलिष्ठ दृढ शरीरवाला और लम्बे कद का है ।" [६]

इस वर्णन में पाध्ये एक गलती करते हैं । शिवाजी लम्बें कद के नहीं थे । उनका कद नाटा था ।

प्रौढ रूप --

मनहर चौहान शिवाजी के प्रौढ रूप का वर्णन करते समय लिखते हैं .... ' उनकी आँखों के सामने शिवाजी का तेजस्वी, गोरा चेहरा तैर रहा था । चेचक आँखें, भरी हुई, ऊपर को उठी मूँछे , गालो को छिपाती और ठुड्डी के पास नुकीली, घनी दाढी ... रोबीली आवाज ... ।' [७]

मनहर चौहान शिवाजी के राजसी रूप का वर्णन करते समय लिखते हैं... ' वे औसत कद के थे, लेकिन उनके छरहरे बदन और तीखी आँखों से जैसे किरणें फूटती रहती थीं । देखते ही पता लग जाता था कि यह किसी राजघराने का युवक है ।' [८]

शिवाजी के प्रौढ रूप का वर्णन जो उपन्यासकारों ने किया है, उस के बारे में डॉ. व्ही. के मोरे जी लिखते हैं ....' उपर्युक्त वर्णन इतिहास सम्मत है । राजस्थानी पत्रों में प्रत्यक्ष देखने के बाद शिवाजी का जो वर्णन किया है उस वर्णन से यह वर्णन मेल खाता है ।' [९]

वेश-भूषा वर्णन ---

हिंदी उपन्यास साहित्य में उपन्यासकारों ने शिवाजी के वेशभूषा का आकर्षक वर्णन नहीं किया है । युद्धप्रसंग में, प्रसंग को सजीव, मूर्त बनाने के लिए वेश-भूषा का वर्णन किया गया है । अफजल खाँ से मिलने जाते समय शिवाजी ने जो वेश-भूषा की थी उसका वर्णन करते समय मनहर चौहान लिखते हैं ....' खाँ की तरह शिवाजी भी ढीलो पोशाक में मिलने आए थे ।

पगडी के नीचे उन्होंने लोहे का टोप पहना था । और पीठ और छाती पर लोहे की जंजीरों का कवच धारण किया था ।' [१०]

मूल्यांकन --

हिंदी उपन्यासकारों का रूप वर्णन श्रेष्ठ एवं आकर्षक बन गया है । एम.के.पाध्ये वर्णन करते समय लम्बे कद का गलत वर्णन कर देते हैं । मनहर चौहान का रूप वर्णन इतिहास सम्मत और सर्वश्रेष्ठ बन गया है । यादवचंद्र जैन एक जगह शिवाजी के सुंदर रूप का चित्रण करते हैं तो दूसरी जगह बदसूरत चित्रित करते हैं । दोनों परस्पर विरोधी चित्रण एक ही उपन्यासकार ने किया है । बदसूरत रूप का चित्रण करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं .... ' मुझे अफसोस है कि मेरे सरदारों की नादानी की वजह से आपको इतनी तकलीफ उठा कर यहाँ तक सफर करना पडा लेकिन यह मेरी खुश-किस्मती है कि आप जैसी सुन्दरी के दर्शन हुए । काश मेरी मां ऐसे रंग के निखार पर होती तो कम-से-कम मैं इतना बदसूरत न पैदा होता ।' [११]

इस एक दोष को छोडकर उपन्यासकारों का आकृति-वेश-भूषा- का चित्रण संतोष जनक हुआ है । शिवाजी की दिव्य,बलिष्ट,सुंदर और राजसी मूर्ति हमारे सामने मूर्त करने में उपन्यासकार सफल हो गये हैं ।

स्थित्यंकन तथा क्रिया-प्रतिक्रिया का चित्रण --

किसी भी श्रेष्ठ नायक की जो क्रिया-प्रतिक्रिया होती है, वह स्थिति के कारण महत्वपूर्ण होती है । इसलिए श्रेष्ठ साहित्यकार चरित्र चित्रण करते समय पात्र की क्रिया-प्रतिक्रिया का विशेष स्थिति का सूक्ष्मता से चित्रण करता है, जिससे पात्र के गुणावगुण का यथार्थ चित्रण होता है ।

शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय उपन्यासकारों ने इस तत्व का अच्छा प्रयोग किया है । बीजापुर दरबार में आने का निमंत्रण शिवाजी को

मिलता है । स्वाभिमानी बालक शिवाजी इस निमंत्रण को ठुकरा देते हैं । वे कहते हैं ....' नहीं पिताजी मैं बीजापुर के सुलतान का गुलाम नहीं हूँ, कि उसके कहने पर उससे भेंट करने चला जाऊँ । यदि वह मुझसे बहुत खुश है, यदि वह मुझसे मिलने के लिए व्यग्र है, तो स्वयं मेरे पास आना चाहिए ।' [१२]

यहाँ शक्तिशाली बादशाह जिसकी सेवा स्वयं शिवाजी के पिता करते थे, ऐसे बादशाह का निमंत्रण अस्वीकार करना महत्वपूर्ण है । इस स्थिति के कारण शिवाजी का स्वाभिमानी गुण प्रकट होता है ।

अफजल खाँ से मिलने जाते समय शिवाजी भयभीत होने का अभिनय करते हैं । उन्हें सलाम करते हैं । ये क्रिया वीरता को शोभा देनेवाली नहीं है । फिर भी शिवाजी युध्द चातुरी से अफजल पर विजय पाना चाहते थे । अत: अपने इच्छित स्थानपर उसे लाने के लिए यह आवश्यक था । यहाँ शिवाजी का रणचातुर्य प्रकट होता है ।' अन्दर से शिवाजी भयभीत नहीं थे तथापि बाहर से भय का प्रदर्शन करते हुए वे अफजलखाँ के निकट गये और झुककर प्रणाम किया ।' [१३]

शक्तिशाली औरंगजेब के दरबार में शिवाजी ने निशस्त्र और सेना रहित होकर जो क्रोध प्रकट किया है वह स्थिति विशेष के कारण महत्वपूर्ण है । शिवाजी के इस स्वाभिमान को प्रकट करते हुए मनहर चौहान लिखते हैं....' आप सब जानते हैं और आपके बादशाह भी जानते हैं कि मैं कैसा आदमी हूँ । जान बूझकर आपने मुझे खडा रखा है । मैं दरबार की खिलअत वापस करता हूँ । उन्होंने सब के सामने खिलअत उतारी, नीचे रखी और ढीठता से औरंगजेब की ओर पीठ करके उधर बढे जिधर सबसे नीचे ओहदे के लोग खडे थे । वहाँ पहुँचकर वह देहाती की तरह जमीन पर बैठ गए ।' [१४]

आगरा से भागने के बाद शिवाजी महाराष्ट्र में आकर जिजाबाई के सामने बालक की तरह रोते हैं । रोना वीरता का लक्षण नहीं है । फिर भी इस स्थिति का चित्रण करते हुये लेखक शिवाजी की मातृभक्ति का चित्रण

करना चाहते हैं । इस सम्बन्ध में मनहर चौहान लिखते हैं .... जैसे - जैसे पूजा समेटकर वह बाहर दौडी । दरवाजे पर ही वह शिवाजी से टकरा गई । शिवाजी उनसे लिपट गये और बच्चे की तरह बिलख - बिलख कर रोने लगे ।'[१५]

निष्कर्ष --

उपन्यासकारोंने स्थित्यंकन द्वारा शिवाजी के स्वाभिमान, नैतिकता, चतुराई, साहस और मातृप्रेम इन गुणों का प्रभावी चित्रण किया हैं ।

अनुभाव चित्रण --

' अनुभावयन्ति इति अनुभावा: ।' [१६]

मन में भावों के उदय होने के बाद शरीर में जो विकार दिखाई देते हैं, उन्हें अनुभाव कहते हैं । ये अनुभाव हमें पात्र के भावों का अनुभव कराते हैं । अत: पात्र के भीतरी भावों को समझाने के लिए अनुभावों का अध्ययन जरुरी होता हैं । दूसरी प्रमुख बात यह हैं कि पात्र किसी स्थिति में पडते ही, उसकी प्रतिक्रिया प्रकट नहीं होती । अत: प्रतिक्रिया व्यक्त होने से पहले, स्थिति प्रभाव से पात्र की मनोदशा में होनेवाले परिवर्तन जानने के लिए पात्र के अनुभावों पर ही निर्भर रहना पडता हैं ।' स्थिति में पड जाने के पश्चात और प्रतिक्रियात्मक विस्फोट होने से पहले पात्र के मुख तथा अन्य अंग-प्रत्यंगों में जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिवर्तन होते रहते हैं, उनमें पात्रों का तत्कालिन मानसिक संघर्ष प्रतिबिंबित होता रहता हैं ।'[१७]

' स्थित्यंकन के बाद तुरंत क्रिया-प्रतिक्रिया का वर्णन अनुभावों के वर्णन के अभाव में अस्वाभाविक और कृत्रिम हो जाता हैं । सहजात प्रतिक्रिया को दबाकर सायास की गई बनावटी प्रतिक्रिया के आधारपर किया गया अनुमान भी गलत हो सकता हैं । लेकिन सहजात अनुभावों को दबाना कठिन हैं । अत: पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया की अपेक्षा उन के अनुभावों के आधारपर उन्हें समझाना अधिक विश्वसनीय होता हैं ।' [१८]

व्यवहार कुशल राजनीतिक पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रिया का बहुधा बनावटी होती हैं । ऐसे पात्रों का असली रूप उनके अनुभवों से ही स्पष्ट होता हैं और क्रिया प्रतिक्रिया की जो कृत्रिमता होती हैं उसकी पोल खुल जाती हैं । इन सभी कारणों से पात्रों का असली रूप जानने के लिए उन के अनुभावों अध्ययन आवश्यक हैं । उसी प्रकार पात्रों के सफल चित्रण के लिए उन के अनुभावोंका चित्रण भी परम आवश्यक हैं ।

हम अब यह देखेंगे कि शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी के अनुभावों का चित्रण करने में कहाँ तक सफलता पाई हैं । उपन्यासकारों ने अनुभाव चित्रण द्वारा शिवाजी के चरित्र के विविध गुणों का प्रकाशन करके उनके चरित्र कोप्रभावी बनाने का प्रयत्न किया हैं ।

पिता शाहजी को बीजापुर के बादशाह ने बन्दी बना दिया । उस समय पिता की मुक्ति करने के लिए शिवाजी एक राजनीतिक चाल चलते हैं । शाहजहाँ बादशाह को उनकी सेवा का आश्वासन देते हैं । फलस्वरूप शाहजहाँ बीजापुर पर दबाव डालकर शहाजी का मुक्ति कर देता हैं । पिता की मुक्ति के कारण शिवाजी को आनंद होता हैं साथ ही साथ वे उदास और चिन्तित हो जाते हैं । इस चिन्ता का कारण यह हैं कि वचन के अनुसार अगर वे मुगलो की नौकरी करेंगे तो स्वतंत्रता का आंदोलन समाप्त होगा । पितृप्रेम के खातिर स्वतंत्रता और जनहित को ठुकराना उन्हें पसंद नहीं था । अत: वे चिंतित थे । यहाँ पितृप्रेम, स्वतंत्रता प्रेम और जनहित की भावना इन तीन गुणों का प्रकाशन अनुभावों के कारण एक साथ हुआ हैं । यादवचन्द्र जैन लिखते हैं ....

" इन खुशियों के बीच भी शिवा राजे के चेहरे पर उदासी की हल्की रेखा खिंच दिखाई देती थी । एक विशेष चिन्ता उत्पन्न हो गई थी । परिस्थिति विचित्र थी । शिवा राजे सोच रहे थे यदि उन्होंने यह वचन पूरे कर दिये जो उन्होंने मुगल शाह के यहाँ भिजवाये थे तो उसका अर्थ होगा कि स्वराज्य की कल्पना अथवा उसकी ओर इतना सब प्रयत्न जो अब तक किया गया

हैं स्वयं ही समाप्त कर देना क्योंकि किसी की भी गुलामी स्वीकारना कैसा ?'[१९]

शिवाजी का स्वतंत्रता प्रेम और दृढ संकल्प इन गुणों का प्रकाशन दु:खाश्रु इस अनुभाव द्वारा आचार्य चतुरसेन ने किया हैं । पुरन्धर की संधि विवश होकर शिवाजी को करनी पडती हैं । जिस स्वतंत्रता के व्रत को उन्होंने लिया था वह व्रत अब टूट रहा था । तब शिवाजी के नेत्रों से आँसू बहने लगे । इससे शिवाजी की स्वातंत्र्य लालसा और दृढ संकल्प वृत्ति प्रकट होती हैं ।

' हम मराठे भी अपने व्रत के लिए जीवन-दान से पीछे हटते नहीं हटते । तीस बरस तक मैंने सह्याद्रि में यही किया हैं । अब आज वह व्रत मैं त्याग दूँ ? शिवाजी के नेत्रों से झर झर आँसू बहने लगे । महाराज जयसिंह जडवत बैठे रहे ।'[२०]

अफजलखाँ को मिलने जाते समय शिवाजी के मनमें भय जरूर था, लेकिन उन्होंने भय का जितना प्रदर्शन किया, उतने वे भयभीत नहीं थे । इस भय के वर्णन द्वारा परमेश्वर प्रसाद सिंहने शिवाजी के रणनीति चातुर्य का प्रकटीकरण किया हैं । वे लिखते हैं .....' यद्यपि अन्दर से शिवाजी भयभीत नहीं थे तथापि बाहर से भय का प्रदर्शन करते हुए वे अफजलखाँ के निकट गए और झुककर प्रमाण किया ।'[२१]

आगरा दरबार में शिवाजी ने जो क्रोध प्रकट किया उससे शिवाजी का स्वाभिमान प्रकट होता हैं । मनहर चौहान लिखते हैं ....' शिवाजी को बडा आश्चर्य हुआ, साथ ही गुस्सा आया - दिवाने खास में उनके बैठने के लिए कोई आसन नहीं । उन्हें एक ओर साधारण हैसियत के सामन्तों के साथ खडा कर दिया गया था । उनका चेहरा तमतमा उठा ।'[२२]

आगरा से भागने के बाद शिवाजी साधू वेश में माँ के सामने आता हैं । वह माँ से अपना रूप अधिक देर तक छुपा नहीं सकता । वह माँ के चरणों पर गिरकर रोने लगता हैं । इससे शिवाजी का मातृप्रेम प्रकट होता हैं ।

`जैसे - जैसे पूजा समेट कर वह बाहर दौडीं । दरवाजे पर ही वह शिवाजी से टकरा गई । शिवाजी उनसे लिपट गए और बच्चे की तरह बिलख - बिलख कर रोने लगे ।` [२३]

युवराज संभाजी दिलेरखाँ की ओर से वापस आते हैं । संभाजी के पास शिवाजी के सामने जाने का साहस नहीं था । उनकी पत्नी येसूबाई शिवाजी से मिलती हैं । इस प्रसंग का वर्णन करते समय मनहर चौहान लिखते हैं...

` मैं भीतर गई । वह गंभीरता से बैठे थे । मैंने उनके पैर छुए । उन्होंने आशीर्वाद दिए और आसन पर बिठाया । वह चुप थे । मैं केवल एक बार उनकी ओर देख सकी । उनकी आँखे छलक रही थीं ।` [२४]

शिवाजी के मित्रप्रेम का सुंदर चित्रण आचार्य चतुरसेन करते हैं । कोंडाणा दुर्ग तानाजी ने जीत लिया मगर वे मारे गये । बालसखा के पराक्रम से वे आनंदी थे पर उसकी मृत्यु से दु:खी थे । तब शिवाजी के आँखों से आँसू गिरने लगते हैं । इसका चित्रण करते समय आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखते हैं ....

` वह निश्चल मूर्ति सैकडों घाव छाती और शरीरपर खाकर वीरासन से विराजमान थी । महाराज की आँखों से टपाटप आँसू गिरने लगे । उन्होंने शोक कम्पित स्वर में कहा --` गढ आया पर सिंह गया ` ।[२५]

निष्कर्ष ---

इसप्रकार उपन्यासकारोंने अनुभावों के आधारपर शिवाजी के चातुर्य, पितृप्रेम, मातृप्रेम, मित्रप्रेम, देशप्रेम, वात्सल्य और स्वाभिमान इन गुणों का प्रभावी ढंग से चित्रण किया है । अनुभाव चित्रण में उपन्यासकार सफल हो गये हैं ।

बहिरंग चित्रण : मूल्यांकन ---

हिंदी उपन्यास साहित्य में कुलवर्णन और नामअर्थद्वारा चरित्र - चित्रण करने का प्रयत्न नहीं किया गया है । आकृति वेश-भूषा का वर्णन

सुंदर हो गया हैं । उपन्यासकारों ने शिवाजी के बाल, किशोर, यौवन और प्रौढ रूप का सुंदर वर्णन किया हैं । शिवाजी का दिव्य, मोहक, तेजस्वी, आकर्षक और बलिष्ट मूर्ति साकार करने में उपन्यासकार सफल हो गए हैं । अनुभावों द्वारा वीर्य, देशप्रेम, मातृप्रेम, वात्सल्य, स्वाभिमान इन गुणों का चित्रण प्रभावी हुआ हैं ।

अंतरंग चित्रण ---

शिवाजी के श्रध्दास्थान और प्रेरणास्त्रोत --

बहिरंग चित्रण से किसी भी चरित नायक का बाह्य स्वरूप ही दिखाई देता हैं । इस वर्णन से नायक के व्यक्तित्व का प्रभाव ही दिखाई देता हैं । इस चित्रण से चरित नायक का प्रथम दर्शनी प्रभाव हम पर होता हैं । लेकिन यह प्रभाव गलत होने की संभावना होती हैं । इसलिए किसी भी चरित नायक का चरित्रचित्रण करते समय नायक के गुणदोषों का चित्रण करना आवश्यक होता हैं । हम प्रथमत: शिवाजी के श्रध्दास्थान और प्रेरणास्त्रोत का विचार करेंगें ।

शिवाजी धार्मिक थे । धर्मपर उनकी श्रध्दा थी । उनके राजनीतिक कार्य के पीछे धर्म का सबल आधार था । जनता में होनेवाली धार्मिक श्रध्दा का उपयोग शिवाजीने राजनीति की सफलता के लिए किया हैं । परमात्मा की इच्छा से ही स्वराज्य की स्थापना होनेवाली हैं ऐसा आश्वासन उन्होंने लोगों को दिया था । इस श्रध्दा से ही वे बलवान हो गये थे ।

श्री तुलजा भवानी ---

तुलजा भवानी उनकी कुलदेवता हैं । इस भवानी के मंदिर की स्थापना उन्होंने प्रतापगढ पर की हैं । किसी भी कार्य के लिए निकलने से पहले वे इस भवानी

का आशीर्वाद लेकर ही निकलते थे ।

अफजल खाँ शिवाजी पर आक्रमण करके आता हैं। शिवाजी के सारे राज्य में विध्वंस मचाता हैं । भवानी के मंदिर में गाय का रक्त छिडकाता हैं । भवानी मंदिर की इस अप्रतिष्ठा के कारण शिवाजी को क्रोध आता हैं । वे समझौता करने के लिए तैयार नहीं होते । ' किन्तु उसने भवानी - मन्दिर में गाय का रक्त क्यों छिडका ? यदि आगे समझौता कर लिया होता तो कौनसा मुँह लेकर भविष्य में मैं भवानी मंदिर में पूजा करने जाऊँगा ।' [२६]

भवानी मंदिर की अप्रतिष्ठा के कारण शिवाजी को क्रोध आता हैं । भवानी की रक्षा करना शिवाजी अपना कर्तव्य समझते हैं । भवानी पर उनकी श्रध्दा थी । मंदिर में जाकर प्रेरणा प्राप्त कर वे कठिन समस्या भी हल कर सकते थे ।

' इसी उधेडबुन में लगभग दो दिन व्यतीत हो गए । तत्पश्चात अंत:प्रेरणा से उत्प्रेरित होकर शिवाजी शिवा-भवानी के मंदिर मे पूजा करने गए । ऐसा कहा जाता हैं कि भवानी मंदिर में ही भवानी ने आकाशवाणी की -- ' पुत्र शिवा । तुम चिन्तित क्यों हो ? मैं तुम्हारे साथ हूँ । निश्चित हैं कि युध्द में विजय तुम्हारी होगी ।' [२७]

भवानी मंदिर से लौटने के बाद पूरे निश्चय के साथ युध्द की तैयारी करने लगते हैं । उनके मन में उत्साह बढ जाता हैं । अफजलखाँ को जिस दिन मिलना था उस दिन शिवाजी भवानी मंदिर में देरतक पूजा करते हैं ।

' शिवाजी प्रात:काल उठे । नित्य क्रिया से निवृत्त होने के बाद शिवा भवानी के मंदिर गए । वहीं पर उन्होंने आसन जमाया । घंटो नामजाप करते रहे ।' [२८]

शिवाजी को भवानी की पूजा से आत्मविश्वास प्राप्त होता हैं । इसी भाव को यादवचन्द्र जैन इसप्रकार वर्णन करते हैं ।

' किले में शिवाजी ने नित्य क्रम से निवृत्त होकर भवानी की पूजा की । आज की पूजा शिवाजी कुछ अधिक देर तक करते हैं ।' [२९]

आगरा में औरंगजेब द्वारा शिवाजी को बंदी बनाया जाता है । वहाँ से निकलने के लिए कोई रास्ता दिखाई नहीं देता । तभी शिवाजी का मन अशांत हो जाता है । उस वक्त शिवाजी भवानी का स्मरण करके शांति प्राप्त करते हैं । ' और शिवा राजा दिन-रात पूजा-पाठ करते रहते । शिवा भवानी का मनन करते ।'[३०]

उपन्यासकार यह चित्रित करते हैं कि शिवाजी भवानी से प्रेरणा पाते थे । भवानी की पूजा से शिवाजी को शांति मिलती थी । शिवाजी में श्रध्दा और प्रयत्न का सुंदर संगम था ।

श्री महादेव --

भवानी की तरह महादेव भी शिवाजी का श्रध्दा स्थान था । रायगढ पर जो जगदीश्वर मंदिर उन्होंने बनवाया है, वह महादेव मंदिर ही है । उसी प्रकार शिखर शिंगणापूर के महादेव मंदिर में दर्शन के लिए बार-बार चले जाते थे । हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी को महादेव भक्ति का चित्रण किया नहीं । सिर्फ मनहर चौहान ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय शिवाजी के महादेव भक्ति का निर्देश किया है । शिवाजी ने समुद्रमार्ग से बस्नूर शहर पर आक्रमण किया । बस्नूर को लूटकर जब वे लौट रहे थे तब रास्ते में वे गोकर्ण महाबलेश्वर के मंदिर में जाकर दर्शन करते हैं ।

' मैं महाबलेश्वर में पूजा करूंगा । बेडे को उधर मोडों शिवाजी ने आज्ञा दी । महाबलेश्वर में शिवाजी का बडा धूमधाम से स्वागत हुआ ।' [३१]

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी की महादेव भक्ति का अतिसामान्य वर्णन किया है ।

माता जीजाबाई --

शिवाजी पितृप्रेम से वंचित थे । उनके जीवन पर सारे संस्कार माता ने ही किये हैं । माता ही शिवाजी के लिए सर्वस्व थी । यादवचंद्र जैन लिखते हैं .....

मॉं उसकी जन्मदात्री थी, पालनकर्त्री थी, शिक्षिका थी, सहयोगिनी थी, मित्र थी, सब कुछ थी ।' [३२]

शिवाजी को मॉं से धीरज,उत्साह, प्रेरणा और आत्मबल मिलता था । मॉं उनका प्रबल श्रध्दास्थान था । अपनजनोंसे मिलने जाते समय वे मॉं से आशीर्वाद लेकर निकलते थे । उनके अशांत मनमें मॉं के आशीर्वाद के कारण शांति निर्माण हो गयी थी । मॉं की प्रेरणा से ही प्रेरित होकर उन्होंने महान कार्य किया था । यादवचंद्र जैन लिखते हैं .....

' बेधडक रहना । तेरा बाल भी बॉंका न होगा । जा, मेरे शेर बच्चे ।.. और उनके जीवन निर्माण में ऐसे शब्द ही तो कितने बडे सहारे थे, आज तक ।' [३३]

शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय उपन्यासकारों ने माता जीजाबाई का चरित्र-चित्रण एक प्रेरणा स्थान के समान किया हैं । वे इसमें सफल हो गये हैं ।

पिता शाहजी --

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी की पितृभक्ति का चित्रण नहीं किया हैं । पिता-पुत्र में संघर्ष था ऐसा मानकर उन्होंने वर्णन नहीं किया होगा । लेकिन यह अनुमान गलत सिध्द होता हैं । यादवचन्द्र जैन ने लिखा हैं ,.... बीजापूर से लौटते समय शहाजीने शिवाजी की सहायता की थी ।

' शिवा । ये मेरे बहुत पुराने साथी और कुछ मंजे हुए मराठा सरदार हैं । इन्होंने बडी-बडी लडाइयॉं लडी हैं । ये भी तुम्हारे साथ पूना में रहेंगें और तुम्हारी सेना का संचालन करेंगें ।' [३४]

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

उपन्यास साहित्य में शिवाजी के जिन श्रद्धास्थानों का वर्णन हुआ है, उसमें माता जीजाबाई का वर्णन सर्वश्रेष्ठ हुआ है । शिवाजी श्रद्धावान थे , साथ ही क्रियाशील भी थे ।

गुरू भक्ति --

शिवाजी के गुरू के रूपमें श्री संत तुकाराम, श्री समर्थ रामदास, श्री मौनिबाबा, श्रीबाबा याकूत, निश्चलापूर गोसावी, रंगनाथ स्वामी, श्री विठ्ठलस्वामी, श्री आनंदमूर्ति, श्री बोधलेबाबा इन महात्माओं के नाम लिए जाते हैं । शिवाजी इनका आदर करते थे । लेकिन ऐसा कहना गलत हैं कि इन्हीं के उपदेश के कारण शिवाजी ने महान कार्य किया ।

उपन्यास साहित्य में शिवाजी के श्रेष्ठ गुरूओं का वर्णन किया हैं । लेकिन डॉ. व्ही. के. मोरे जी इस सम्बन्ध मे लिखते हैं ....

" सब देखा जाय तो युगपुरूष स्वयंभू होता हैं । वह स्वयंप्रकाशित होता हैं । उसे किसी अन्य से प्रकाश प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती । उसकी श्रेष्ठ प्रतिमा ही उसे नया रास्ता दिखाती हैं । इस श्रेष्ठ प्रतिमा के आधारपर वह नया मार्ग ढूँढ कर मानव कल्याण करता हैं । युगप्रवर्तन कारी कार्य गुरूबल से नहीं प्रतिभा बल से होता हैं ।" [३५]

उपन्यासकार विभिन्न गुरूओं को विभिन्न गुणों का श्रेय देते हैं । यादवचंद्र जैन लिखते हैं कि संत तुकाराम उनके सांस्कृतिक गुरू और समर्थ रामदास उनके धार्मिक एवं राजनीतिक गुरू थे । मगर यह सत्य नहीं हैं ।

जीजाबाई --

शिवाजी के अनेक गुरूओं की चर्चा उपन्यासकार ने की हैं । गुरू का श्रेष्ठ स्थान व्यावहारिक अर्थ से माता जीजाबाई को देना चाहिए । शिवाजी के

मनपर सारे संस्कार जीजाबाई ने किये हैं । इन्हीं संस्कारों के कारण शिवाजी त्याग, समर्पण, देशसेवा और जनसेवा के मार्गपर अग्रसर हो सके । माँजीजाबाई ने शिवाजी को बचपन से लेकर राज्याभिषेक समारोह तक सांनिध्य में रहकर मार्गदर्शन किया था । रामायण , महाभारत की कथाओं को सुनाकर जीजाबाई ने शिवाजी को बलवान बनाया हैं ।

` माँ उन्हें रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, शुक्रनीति, चाणक्य नीति पढातीं । महापुरुषों और महात्माओं की जीवनियों के मुख्य अंगो पर शिवाजी से बहस करातीं । महाभारत में से विदुरनीति के अंश तो जैसे प्रतिदिन की चर्चा के विषय थे । इस प्रकार शिवाजी की माता जीजाबाई उनमें धर्म और राजनीति के साथ - साथ संस्कृति, इतिहास, दर्शन तथा नैतिकता के पाठ पढाती थी ।` [३६]

महाराजा जयसिंह जब विराट सेना लेकर महाराष्ट्र में आते हैं, तब शिवाजी चिंतित हो जाते हैं । उस संभ्रम की अवस्थामें जीजाबाई कहती हैं ....

` शिवाजी उत्तेजित हो गए, तो क्या हम भी झुक जाएँ ? मुगलों के दास हो जाएँ ? जीजाबाई ने हाथ पकडकर उन्हें बिठाया , ` शिवा, वीरता के आवेश में यदि तुम मर ही मिटोगे तो उससे होगा क्या ? तुम्हारे बाद भारतीय संस्कृति के भी मरने की बारी आ जाएगी । इससे अच्छा तो यह हैं कि अभी किसी तरह जीवित रह जाओ, शक्ति जुटाओं और अवसर देखकर बगावत कर दो ।` [३७]

शिवाजी को शिक्षा देनेवाली माता जीजाबाई थी । यादवचंद्र जैन लिखते हैं ....` माँ उसकी जन्मदात्री थी, पालनकर्ता थी, शिक्षिका थी, सहयोगिनी थी, मित्र थी , सब कुछ थी ।` [३८]

यादवचन्द्र जैन ने जीजाबाई के प्रभाव का वर्णन सुंदर ढंग से किया हैं ।

दादोजी कोंडदेव --

दादोजी कोंडदेव शिवाजी के बचपन के गुरु थे । उन्होंने राजनीति और व्यवहार का ज्ञान शिवाजी को दिया हैं । शिवाजी के श्रेष्ठ कार्य के पिछे दादोजी कोंडदेव के उपदेश को जोडना गलत हैं । दादोजी की मृत्यु जल्द हो जाने के कारण शिवाजी के महान कार्य से संबंध दिखाना उचित नहीं । श्री परमेश्वर - प्रसाद सिंह दादोदी कोडदेव के उपदेश के बारे में लिखते हैं ....

` विपत्ति के समय घबराना नहीं, बल्कि राम की तरह गम्भीर और कृष्ण की तरह नीतिज्ञ बनकर कठिनाइयों का सामना करना ।

हाँ, एक बात और, कुछ लोग प्रलोभन में पडकर अपने धर्म को भी भूल जाते हैं । लेकिन तुम ऐसा मत करना । स्वधर्म - आचरण की मर्यादा को समझने वाला मनुष्य ही पराक्रमी कहलाता हैं ।` [३९]

परमेश्वरप्रसाद सिंह ने दादोजी कोंडदेव के उपदेशों की एक सूची दी हैं । लेकिन यह बात सच नहीं हैं ।

पन्हाला दुर्ग में शिवाजी सिद्दी जौहर के घेरे में बंद हैं और शाहिस्ताखाँ पूनापर आक्रमण करके आया था । ऐसे कठिन समयपर भी शिवाजी शरण आनेवाले या दबनेवाले नहीं थे क्योंकि वे कोंडदेव के शिष्य थे । यादवचन्द्र जैं लिखते हैं ....

` और लग रहा था दोनों बीच में भींचकर शिवा राजा को पीस डालेंगे परन्तु शिवा राजा भी मोम का बना हुआ नहीं था । राजनीति के हर दाँव - घात को उसने जाना पढा था । वह कोंडदेव का शिष्य था ।` [४०]

शिवाजी कोंडदेव के शिष्य थे यह बात इतिहास सम्मत हैं । लेकिन शिवाजी को हर कार्य के पिछे गुरु का महत्व कहने से कार्य करनेवाले शिवाजी का महत्व कम होता हैं ।

श्री समर्थ रामदास --

शिवाजी और श्री समर्थ रामदास की प्रथम मुलाकात १६७२ इ. में हो गई है । परन्तु उपन्यासकार शिवाजी के प्रारंभिक जीवन से ही गुरू के रूप में श्री समर्थ का चित्रण करते है । शिवाजी ने १६७४ ई.में उन्होनें अपना राज्याभिषेक कर लिया । अत: शिवाजी के राजनीतिक कार्य में समर्थ रामदास का प्रारंभिक काल में योगदान होना सम्भव नहीं । फिर भी यादवचंद्र जैन शिवाजी और रामदास का संबंध एक राजनीतिक सलाहकार के रूप में वर्णन करते है । शाहजी बंगलोर रहते थे । वे पत्नी जीजाबाई और पुत्र शिवाजी को बंगलोर बुलाते है । जीजाबाई बंगलोर जाना नहीं चाहती । तब समर्थ रामदास कहते है कि शिवाजी की राजनीतिक भलाई के लिए तुम्हें बंगलोर जाना होगा ।

` शिवाजी के लिए तुम्हें बंगलोर जाना होगा जीजाबाई । समर्थ गुरू रामदास ने बहुत धीमे से कहा ।` [४१]

राज्याभिषेक समारोह में शिवाजी के लिए समर्थ रामदास ने शुभकामना का संदेश भेजा था । इस के बारे में यादवचंद्र जैन लिखते है ....

` सर्व प्रथम आज के इस अवसर पर आयी हुयी समर्थ बाबा रामदास की शुभ कामना मैं पढकर सुनाता हूँ ` विजय चिरस्थायी हो । दृढ - संकल्प बने रहना `, ` हिंदवी स्वराज्य ` कल्पना पूर्तिपर बधाई । मारूति सेना तथा हरि-कीर्तन न भूलना । यह राष्ट्र,धर्म,समाज व संस्कृति की महान् विजय सिध्द हो ।` [४२]

यहाँ इस शुभकामना से एक भ्रम पैदा होता है कि अभी यह कार्य अधुरा है । लेकिन राज्याभिषेक करके शिवाजी ने राष्ट्र की विजय सिध्द की है । उपन्यासकार समर्थ रामदास को शिवाजी के श्रेष्ठ गुरू के रूपमें चित्रित करते है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

श्री संत तुकाराम --

जीजाबाई संत तुकाराम के सत्संग में रह चुकी थी । संत तुकाराम महाराज के भजन और कीर्तन शिवाजी श्रध्दा से सुनते थे । संत तुकाराम महाराज ने शिवाजी के कानों में मंत्र फूँक दिये ।

` संत तुकाराम यों तो संसार के माया-मोह से वैराग्य धारण किये हुए थे परंतु बालक शिवा को वे दिन-दिनभर गोद में लिये रहते थे । उसके कानों में वे भगवन्नाम के मंत्र फूँका करते थे ।` [४३]

उपन्यासकार यादवचंद्र जैन लिखते हैं कि संत तुकाराम महाराज ने अनेक प्रकार के आशीर्वाद शिवाजी को दिए ।

` संत ने अनेक प्रकार से शिशु को आशीर्वाद दिया । उसको पुचकारा । उसके सरपर हाथ फेरा । कान में कुछ चुपके से कहा और तब शाहजी को संबोधित कर बोले -- शाहजी । तुम्हारा पुत्र शिवा दिक् दिशाओं में प्रसिध्द पावेगा .... ।` [४४]

गुरु के रूप में यह चित्रण अत्यंत सामान्य है ।

मूल्यांकन ---

परमेश्वर प्रसाद सिंहजी, विभिन्न गुरुओं ने उन्हें कौन-कौन सा गुण दिया इसका विवेचन करते समय लिखते हैं ....

` महानुभावो । माता के स्नेहांचल की छाया में मेरा शैशव खिला। दादाजी कोणदेव ने मुझे ज्ञान चक्षु दिए । माता के निकट बैठकर मैं ने रामायण, गीता, महाभारत एवं अन्यान्य धर्मग्रंथों की शिक्षा प्राप्त की । संत तुकाराम मेरे सांस्कृति गुरु हुए और समर्थ बाबा रामदास धार्मिक एवं राजनीतिक गुरु और सच पूछिये तो आप लोग मेरे सामाजिक गुरु हैं ।` [४५]

इस प्रकार उपन्यासकार शिवाजी के अनेक गुरुओं का वर्णन करते हैं ।

लेकिन सत्यता यह हैं कि शिवाजी के कार्य में माता जिजाबाई का श्रेष्ठ योगदान रहा हैं ।

बचपन और शिक्षा --

बचपन --

बालक का बचपन जिसप्रकार बीतता हैं उसके आधार पर उसका व्यक्तित्व बनता हैं । हर व्यक्ति के बचपन के संस्कार महत्वपूर्ण होते हैं । शिवाजी जब गर्भ में थे तब वे अपने माता पिता के साथ रणक्षेत्र में भाग रहे थे । पिता शहाजी का पीछा लखुजीराव जाधव याने जीजाबाई के पिता कर रहे थे । ससुर जामात का पीछा करता हैं, कन्या जामात के साथ भाग रही हैं । ऐसी अस्थिर परिस्थिति में जीजाबाई थी । ऐसी अवस्था में शिवाजी का जन्म शिवनेरी पर होता हैं । शहाजी बेंगलोर बस जाते हैं । अत: पिता का प्यार शिवाजी को नहीं मिलता । लखुजीराज जाधव और उनके पुत्रों का विश्वासघात से देवगिरी में वध किया जाता हैं । जीजाबाई को अब कई का आधार नहीं रहता । जीजाबाई की इस मनस्थिति का प्रभाव शिवाजी पर होना स्वाभाविक हैं । शिवाजी की इस अवस्था के कारण जीजाबाई शहाजी को लिखती हैं ....

` एक पुत्र अर्वंध संतान की तरह पहाडों-गुफाओं में पडे रहे । अकेलेपन का ,खोयेपन का, बिछुडेपन का जीवन व्यतीत करे और दूसरा सब सुख प्राप्त करे ।... और निकटवर्ती पुत्रपर ही समुचा प्यार उडेल रहे हैं और एक निर्दोष पुत्र अनाथ का सा जीवन व्यतीत कर रहा हैं । क्या पाप किया हैं, उस मासूम ने ?` [४६]

शिवाजी के बचपन की होशियारी देखकर शाहजी कहते हैं ....

` एक साथ अपने पूरे परिवार से मिलकर शाहजी को बडी प्रसन्नता हुई । किंतु मन ही मन वे दु:खी भी हो रहे थे ...` हाय । अपने अवतारी पुत्र शिवाजी के व्यक्तित्व के विकास के लिए मैंने कुछ नहीं किया । क्या मैं ने जीजाबाई के प्रति अन्याय नहीं किया हैं ? क्या इस निष्ठुर बर्ताव के लिए भगवान भी मुझे कभी क्षमा करेंगे ? ` [४७]

शिक्षा -

शिवाजी के शिक्षा सम्बन्धी चित्रण उपन्यासकार ने किया है। शिवाजी की शिक्षा का आरंभ श्री समर्थ रामदास के हाथों से किस प्रकार धार्मिक वातावरण में हो गया, इसका चित्रण करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं ....

' शिवा बैठा सोच रहा था कि इस सांस्कृतिक कार्य का इस समय वही नायक है। तभी समर्थ बाबा ने शिवा के हाथ में कलम दी और रोली में डुबोकर पाटी पर हाथ पकडकर लिखाया ...

' रा म '

' अ आ '

इस प्रकार शिवा का विद्यारम्भ संस्कार बडे ही सरस व धार्मिक वातावरण में उस युग के महान त्यागी समर्थ बाबा रामदास के हाथों सम्पन्न हुआ।' [४८]

माता जीजाबाई ने एक सच्चे गुरू के रूपमें शिवाजी को शिक्षा दी थी। उन्होंने धार्मिक ग्रंथों के आधारपर शिक्षा देने का प्रयास किया है। ' माँ उन्हें रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, शुक्रनीति, चाणक्य नीति पढाती। महापुरुषों और महात्माओं की जीवनियों के मुख्य अंगों पर शिवाजी से बहस करतीं। महाभारत में से विदुरनीति के अंश तो जैसे प्रतिदिन की चर्चा के विषाय थे। इस प्रकार शिवाजी की माता जीजाबाई उनमें धर्म और राजनीति के साथ-साथ संस्कृति, इतिहास, दर्शन तथा नैतिकता के पाठ पढाती थी।' [४९]

मूल्यांकन --

जीजाबाई ने शिवाजी को श्रेष्ठ शिक्षा दी थी यह बात सत्य है। लेकिन सिर्फ आध्यात्मिक एवं लिखने पढने की शिक्षा के कारण शिवाजी इतने श्रेष्ठ बन गये ऐसा हम कह नहीं सकते। शिवाजी ने श्रेष्ठ कार्य करने की शक्ति,

साहस और प्रेरणा किन बातों से प्राप्त हुई थी यह अधिक महत्वपूर्ण है। बचपन में शिवाजी माँ की ओर आकृष्ट होता है। माँ दुःखी थी। उस दुःख का प्रभाव शिवाजी पर होता है। इस परिस्थिति का अत्यंत सुंदर वर्णन आचार्य चतुरसेन करते हैं ---

' पति की इस उपेक्षा का जीजाबाई के मनपर भारी प्रभाव पडा और उनकी वृत्ति अन्तर्मुखी होकर धार्मिक हो गई, जिसका प्रभाव शिवाजी पर भी पडा। इस समय शिवाजी को साथ खेलने के लिए न कोई बालक साथी था, न भाई - बहन थे, न पिता का सहवास था। विवाह का वे महत्व न समझते थे। इस एकाकी पन ने शिवाजी को अपनी माता को निकट ला दिया और वे मातृप्रेम में अभिभूत हो, माता को देवी के समान पूजने लगे। इस उपेक्षा और एकाकी जीवन ने शिवाजी को स्वावलम्बी, दबंग और स्वतंत्र विचारक बना दिया। उनमें एक ऐसी अन्तःप्रेरणा उत्पन्न हो गई कि वे आगे चलकर सब काम अन्तःप्रेरणा से करने लगे। दूसरे के आदेश-निर्देश की उन्हें परवाह न रही।' [५०]

आचार्य चतुरसेन जी का यह वर्णन अत्यंत मार्मिक है। शिवाजी के श्रेष्ठ व्यक्तित्व को प्रकट करने में आ.चतुरसेन सफल हो गए हैं।

वाणी --

चतुर लोग अपनी वाणी से अपना कार्यकर लेते हैं। जिस की वाणी में मिठास भरी बाते होती हैं, वह व्यक्ति हर कार्य में सफल हो जाता है। साधारण कार्य में ही शस्त्र उठाना यह तर्कसंगत नहीं लगता। युध्द हर कार्य का अंतिम उपाय होता है। शिवाजी ने अपनी मधुर वाणी से अपने अनेक कार्यों को संपन्न बनाया है। बालक शिवाजी की मोहक वाणी का वर्णन करते समय यादवचंद्र जैन लिखते हैं ....

' लम्बे गोरे मुहपर कटे आम सी बडी-बडी पैनाकी सी आँखे लम्बी ठोडी को दाबकर मुस्कराते ओठ और ओठों से निकलने वाली मिठास भरी बातें बडी भली लगती थी। वे सभी को पहले भेंट में ही मोह लेते थे।' [५१]

अपनी वाणी की शिष्टता और प्रभाव-शालीनता से शिवाजी, मंजे हुए राजा जयसिंह को भी प्रभावित करते हैं । उसका सुंदर वर्णन उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन करते हैं ....

` शिवाजी ने कहा - महाराज, अपना घर समझकर ही आया हूँ और श्रीमानों के सद्-व्यवहार से सम्मानित हूँ । आपका सेवक हूँ और आपकी आज्ञा से विमुख नहीं । किन्तु वे महाराजाओं के महाराज, हे भारतीयोधान की क्यारियों के माली, हे श्रीराम के वेशधर, आपसे सब राजपूतों की गर्दन ऊँची है । आपकी यशस्विनी तलवार से बाबर के खानदान की श्रीवृध्दि हो रही है । सौभाग्य आपका साथ दे रहा है । हे सौभाग्यशाली बुजुर्ग, मैं आप को प्रणाम करता हूँ ।

इतना कहकर शिवाजी ने अपना मस्तक राजा के चरणों में झुका दिया । फिर कहा ...` मैंने सुना है, आप दक्षिण - विजय की ठानकर आए हैं । महाराज, क्या आप दुनिया के सामने हिन्दुओं के रक्त से अपने को रंगना चाहते हैं ? क्या आप नहीं जानते, यह लाली नहीं है, कालिमा है ? यह धर्म द्रोह है ? ` [५२]

अफजल वध प्रसंग में अफजलखाँ के दूत को शिवाजी अपने मधुर वाणी से प्रभावित करते हैं । इस प्रसंग का वर्णन करते समय उपन्यासकार परमेश्वरप्रसाद सिंह लिखते हैं ....

` शिवाजी की मधुर वाणी एवं सुंदर व्यवहार से खुश होकर भास्कर जी मन ही मन सोच रहे थे ...` एक शिवाजी हैं जो शत्रु के दूत को भी देवता समझाते हैं और दूसरा अफजलखाँ है जो मित्र के दूत को भी भिक्षुक समझाता है कहीं ऐसा न हो कि उस दुराचारी एवं छली-प्रपंची के जाल में शिवाजी फँस न जाएँ और अनजाने उसकी हत्या कर दी जाए । यदि इस देवता के प्रति ऐसा कुठाराघात हुआ तो पाप का भागी मैं ही होऊँगा ।` [५३]

इसी प्रसंग को डा. भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं ....

` हाँ. महाराज, मैंने अपनी जाति और अपने देश के प्रति अपना कर्तव्य

पूरा कर दिया । आप आज मराठों और हिन्दुओं के एकमात्र रक्षक उनकी, एकमात्र आशा हैं, आपको मैं काल के मुँह में नहीं जाने दे सकता, भले नमकहरामी के पाप में मुझे नरक में ही क्यों न जाना पडे ।"[५४]

कितना भी कठिन कार्य शिवाजी अपने मधुर वाणी से सहजता से करते थे । उपन्यासकार ने शिवाजी की वाणी का सुंदर वर्णन किया है ।

वात्सल्य --

शिवाजी का पुत्र संभाजी मुघल सरदार दिलेरखाँ के पास भाग गया था । संभाजी के मन में क्रोध था, इस कारण वह भाग गया था । संभाजी को वापस लेने के लिए शिवाजी अनेक प्रयत्न करते हैं । संभाजी को वापस लाने में शिवाजी सफल हो जाते हैं । उस समय युवराज संभाजी के मनमें पिता शिवाजी के बारेमें विचार आते हैं । संभाजी के इन विचारों से शिवाजी के वात्सल्य भाव का चित्रण होता हैं ।

" जिस पिता ने मेरे विरुध्द युध्द किया और मेरे ही कारण औरंगजेब से हुई संधि भंग कर दी, जिसे मैं अपना शत्रु माने हुए हूँ, उसी पिता ने मेरी सुरक्षा और सहायता का ध्यान रखा । क्या मैं अबतक गलत नहीं समझाता रहा ? उन्हें मैंने हर तरहसे नुकसान पहुँचाया हैं । बदले में यह स्नेह । संभाजी का मन भर आया था ।" [५५]

इस अवतरण से शिवाजी को एक स्नेही पिता के रूप में चित्रित किया हैं । उपन्यासकारों में सिर्फ मनहर चौहान ने ही इस रूप का चित्रण किया हैं ।

दूरदृष्टि ---

उपन्यासकारों ने शिवाजी की बुध्दिमत्ता का स्वतंत्र रूप से वर्णन नहीं किया हैं । शिवाजी की दूरदृष्टि का वर्णन करते हुए चातुर्य - कौशल्य का वर्णन किया हैं । बुध्दिमान व्यक्ति ही संकट के समय सफल योजना बनाता हैं । शिवाजी में यह दूरदृष्टि थी । अफजलखाँ की भेट अत्यंत कठिन प्रसंग की बात थी ।

अपनजलखाँ क्परनीति का योध्दा था । उस के साथ सैय्यद बंडा नामक तलवार बहादूर था । शिवाजी संभाव्य कठिन बात को जानकर जिवा-महाला और संभाजी कावजी नामक दो श्रेष्ठ वीरों को अपने रक्षक के रूप में चुनते हैं । इन्ही दो वीरों ने वीरता दिखा कर शिवाजी का जान बचाई । यादवचन्द्र जैन लिखते हैं ----

` इनमें कावजी एक भयंकर प्राणी था । अपनजलखाँ की ही तरह खूंख्वार और उसी की तरह का अतीत भी रखता था अपना । जिस प्रकार अपनजलखाँ ने अपने कैंप में आत्मसमर्पण के लिए आये हुये शेरा के राजा कस्तूरी रंगा की धोखा देकर निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी थी । उसी प्रकार शिवाजी के कैंप में आत्मसमर्पण के लिये आये हुए हनुमन्तराय मोरे का वध कावजी कर चुका था । शिवाजी ने तलवार के तेज हाथ चलानेवाले तथा अनेक प्रकार के हथियारों को खूबी से इस्तेमाल करनेवाले इन दो मराठों को अपने साथ ले जाने के लिए ही विशेष रूप से चुना था ।` ५६

अब शिवाजी सूरत पर आक्रमण करते हैं ।उसवक्त परमेश्वर प्रसाद ने शिवाजी की दूरदृष्टि का परिचय दिया है । वे लिखते हैं ....

` किन्तु यहाँ पर छल-प्रपंच से काम करना पडेगा - मुगलों की सेना के मध्य हम लोग यह घोषणा कर दे कि दक्षिण की ओर आक्रमण करना है और जैसे ही मुगलों की सेना दक्षिण की ओर प्रस्थान करे हम लोग उत्तर की ओर बढे और सूरत पर आक्रमण कर दे ।` ५७

पुरंदर की संधि करते समय शिवाजी की यही दूरदृष्टि अच्छा काम करती है । विशाल सेना से टकराना, स्वयं का नाश करना ही है । इसलिए समझौता करना अच्छा समझते हैं । बीजापूर और मुगल दल इनमें कोई भी हारे भविष्य में शिवाजी का लाभ ही होनेवाला है । इस समय शिवाजी मोरेश्वर से कहते हैं .....

" मैंने उस समय जो जयसिंह से युध्द नहीं किया, अच्छा ही किया । उस समय जयसिंह के पास ३२,००० सेना थी । युध्द होता तो बडी क्षति होती

तथा परिणाम अनिश्चित था । ठीक हुआ कांटे से कांटा निकला । शत्रुदल बिखर गया । अपना दल अक्षत रहा ।'[५८]

पुरंदर संधि में जो तय हुआ था, उसी के अनुसार शिवाजी को जाना अनिवार्य था । आगरा जाते समय शिवाजी के मन में दूरदृष्टि थी । आगरा दरबार की कमजोरियाँ देखने का और मुघल सेना संचालन की जानकारी प्राप्त करने का मौका भी उन्हें मिलनेवाला था । अत: वे आगरा गये ।

' लेकिन औरंगजेब की बात मानने से एक बडा फायदा भी था कि वहाँ जानेपर शक्तिशाली सामन्तों व सेनानायकों से शिवाजी की मुलाकात होती । तब शिवाजी यह भांप सकते थे कि भविष्य में औरंगजेब के विरुध्द बगावत करनेपर कौन उनका मददगार हो सकेगा और कौन नहीं, साथ ही वह मुगल सेना के संचालन के बारे में जानकारी हासिल कर सकते थे । दरबार की कमजोरियाँ भी तब उनकी पैनी आँखों से छिपी थोडे ही रहती ।' [५९]

इसप्रकार उपन्यासकारों ने शिवाजी की दूरदृष्टि का परिचय दिया हैं । शिवाजी ने शत्रु और मित्र की परिक्षा करते समय बुद्धिमत्ता का अच्छा परिचय मिलता हैं ।

कार्यक्षमता --

बुध्दिमत्ता के साथ - साथ कार्यक्षमता होने से कार्य सफल हो जाता हैं । शिवाजी में तीन प्रमुख गुण थे, वे हैं -- बुध्दिमत्ता, दूरदर्शिता और कार्यक्षमता । इन तीन गुणों के आधारपर ही शिवाजी ने विजय प्राप्त की हैं । शिवाजी ने प्रसंगावधान और कार्यक्षमता से अफजलखाँ को मार डाला ।

' सर्वप्रथम अफजलखाँ ने शिवाजी का गला घोंटने के लिए कुछ नीचे झुका, तत्पश्चात् उसने अपनी तलवार निकाली और शिवाजी के बगल में प्रहार किया । किन्तु, हाय ! प्रहार निष्फल गया और तलवार भी टूट गई, क्योंकि शिवाजी अंगरखे के नीचे कवच पहने हुए थे । उसे तो ऐसा लगा कि उसके पाँव

तले से जमीन ही खिसक गई । भय से उसके होंठ सूखने लगे । उसी बीच शिवाजी ने झटका देकर अफजलखाँ के हाथों से अपनी गर्दन छुडा ली । उसके बाद पुन: चैतन्य होकर उन्होंने अपने बिछवे को अफजलखाँ की कोख में घुसेड दिया तथा अपने पैनालादी बघनख से उसकी आँतों को बाहर निकाल दिया ।’[६०]

अफजलवध के बाद शिवाजी आराम नहीं करते । भयभीत शत्रु का नाश कर वे उसका पीछा करते हैं । कुछ ही काल में वे पन्हाला दुर्ग को जीत लेते हैं ।

‘अफजलखाँ की हत्या के बाद बीजापुर शिवाजी को चैन नहीं लेने दे सकता था । शिवाजी भी कब चुप बैठनेवाले थे । खाँ को मरे अभी अठारह दिन ही हुए थे कि शिवाजी ने पन्हाला के चारों ओर घेरा डलवा दिया ।’[६१]

ऐसी कार्यक्षमता और वीरता के कारण ही बीजापुर दरबार का एक सरदार अफजलखाँ की ओर संकेत करते हुए कहता है । अफजलखाँ बीजापुर दरबार में शिवाजी के बंदोबस्त का बीडा उठाता है । उस वक्त वह सरदार कहता है....

‘यह कौन-सी बला मोल ले ली अफजल ने अपने ऊपर ? हाथी, घोडे बहे जाएँ, गधा कहे कितना पानी ? जब बडे-बडे सूरमा शिवा के नाम से कांपते हैं तो किस खेत की मूली बन चला है यह उसे पकड लाने ?’[६२]

शिवाजी की कार्यक्षमता के बारे में मनहर चौहान भी लिखते हैं ....
‘वह बहुत खूंख्वार है । मुझे तो लगता है, वह कभी आराम ही नहीं करता, हर समय छापे मारता रहता है ।’[६३]

हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी की कार्यक्षमता का वर्णन मार्मिक हुआ है ।

संघटक --

अनेक शताब्दियों से मुसलमान मराठों पर शासन कर रहे थे । अनेक मराठे वीर बहादुर थे । लेकिन वे यवनों की नौकरी करना इतना ही जानते थे । इस शक्ति को संगठित करके इन मुसलमानों का विरोध किसी ने भी नहीं

किया । शिवाजी ने इन मराठों को संगठित करने का महान कार्य किया । इस संगठित शक्ति से ' हिंदवी स्वराज्य ' की स्थापना की ।

' मराठे चिरकाल से दक्षिण भारत में रहते आ रहे थे और शताब्दियों से अपनी जन्मभूमि में विदेशी मुस्लिम शासकों की प्रजा बने हुए थे । न तो उनका राजनैतिक संगठन ही था, न उन्हें कोई अधिकार ही प्राप्त थे । इन बिखरे हुए मराठों को संगठित कर एक जाति में परिणत कर के उन्हें मुघल साम्राज्य पर चोट करने की योग्यता औरंगजेब के प्रतिद्वन्द्वी शिवाजी ने प्रदान की ।' ६४

इस से यह स्पष्ट है कि शिवाजी ने बहादूर और निस्वार्थी लोगों को संगठित किया था । इसी संगठन शक्ति के आधारपर ही शिवाजी ने शक्तिशाली यवनों का पराजित किया । उपन्यासकार शिवाजी को श्रेष्ठ संगठक के रूप में चित्रित करते हैं ।

स्वाभिमान --

स्वाभिमान यह पुरुषा का अलंकार होता है । वीरों में स्वाभिमान की आवश्यकता होती है । इसी स्वाभिमान के कारण वीर, देश और समाज की सेवा का कार्य कर सकते हैं । शिवाजी के पूर्व अनेक वीर पुरुषा थे । लेकिन उन्होंने अपनी सारी वीरता मुगलों की सेवा में लगायी । सिर्फ राणाप्रताप और शिवाजी ने ही स्वाभिमान प्रकट किया वे स्वाभिमानी वीर थे । उपन्यास साहित्य में शिवाजी के स्वाभिमान का वर्णन बीजापुर और आगरा दरबार के दो प्रसंगोंपर आधारित है ।

बीजापुर दरबार प्रसंग --

शिवाजी के पिता बीजापुर के सरदार थे । शिवाजी के पिता शाहजी चाहते थे कि बाल शिवाजी दरबार में आकर बादशाह को सलाम करें । स्वाभिमानी बालशिवाजी इन्कार करते हैं ----

`नहीं पिताजी मैं बीजापुर के सुल्तान का गुलाम नहीं हूँ कि उसके कहनेपर भेंट करने चला जाऊँ । यदि वह मुझ से बहुत खुश है, यदि मुझ से मिलने के लिए व्यग्र है, तो उसे स्वयं मेरे पास आना चाहिए ।` [६५]

पिता शाहजी ने शिवाजी को समझाकर दरबार में ले जाते हैं । शिवाजी सुल्तान को सिजदा नहीं करते । शाहजी सिजदा करने के लिए कहते हैं तब शिवाजी कहते हैं ....

`आदर देने के लिये इतना काफी है ... शिवाजी ने स्पष्ट उत्तर दे दिया ।` [६६]

आगरा दरबार प्रसंग --

शिवाजी संकट का मुकाबला संयम और धीरज के साथ करते थे । लेकिन औरंगजेब के दरबार में जो क्रोध प्रकट किया , वह उनके संयमी स्वभाव के विरुध्द था । औरंगजेब विरोधी शक्ति को एक नया आत्मविश्वास शिवाजी ने दे दिया । शायद इन्हीं कारणों से शिवाजी ने यह क्रोध किया हो । शिवाजी के जीवन का यह प्रसंग महत्वपूर्ण है । बीजापुर दरबार की तरह यह काल्पनिक प्रसंग न होकर ऐतिहासिक सत्य प्रसंग है ।

आगरा में शिवाजी का स्वागत सामान्य सरदार ने किया । उन्हें पाँच हजारी सरदारों की कतार में खडा किया । तब शिवाजी का स्वाभिमान प्रकट हुआ । आचार्य चतुरसेन लिखते हैं ....

`इन दो मध्य श्रेणी के उमरावों ने कुछ ही दूर आगे बढकर शिवाजी की अगवानी की थी । दरबार में भी उन्हें पाँच हजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा किया गया था । सालगिरह के उत्सव के पान सब उमरावों को दिए गए, लेकिन शिवाजी को पान भी नहीं मिला । जलसे की खिलाअतें और सिरोपाव शाहजादों, वजीर जफरखाँ और महाराजा जसवन्तसिंह को दिए गए, शिवाजी को खिलअत भी नहीं मिली । उधर घण्टे-भर से खडे रहने के कारण वे थक गए थे और इस अपमान से, वे गुस्से से लाल हो उठे ।` [६७]

औरंगजेब के ध्यान में शिवाजी क्रोध आता है । वह रामसिंह को शिवाजी की पूछताछ करने को कहता है । रामसिंह से शिवाजी कहते हैं ....

` तुम्ने देखा है, तुम्हारे बाप ने देखा है । क्या मैं ऐसा आदमी हूँ कि जानबूझाकर मुझे यों खडा रखा जाए ? फिर उन्होंने चिल्लाकर कहा ... ` ये कौन हैं जो औरत के समान गहने पहनकर मेरे आगे खडे हैं । वे मुझसे ज्यादा इज्जत रखते हैं तो युध्दक्षेत्र में अपनी योग्यता प्रकट करें । मैं यह शाही मनसब छोडता हूँ ।` वे मूडकर बादशाह की तरफ पीठ करके वहाँ से चल दिए और जाकर एक ओर बैठ गए ।` ६८

औरंगजेब रामसिंह से कहता है कि जाओ उस मराठा सरदार को समझा - बुझा कर फिर दरबार में लाओ । रामसिंह शिवाजी से कहता है - चलिए दरबार में चलिए । खिलअत लेने को बादशाह सलामत बुला रहे हैं । शिवाजी के स्वाभिमान का चित्रण डॉ. भगवतीशरण मिश्र करते हैं ....

` भाड में गई खिलअत और नहीं लेना - देना मुझे कुल बादशाह सलामत से । अब जायेगी तो मेरी लाश ही जायेगी मुगलिया दरबार में । शिवाजी जीते जी कभी मुँह नहीं करने को उस तरफ । जा कर बोलो औरंगजेब को करा दे मेरा सिर कलम । मैं जानता था यही हाल होगा मेरा वहाँ । पर मुझे अपनी जान की कोई परवा नहीं । भवानी की कृपा से मैं जानता हूँ कि इस मिट्टी का क्या मूल्य है । जाऊँगा तो शान से मरूँगा तो शान से । भेज दो मुगलिया दरबार के दो चार योध्दों को रामसिंह, कर ले मुझ से दो- चार हाथ । ताकत हो तो ले चलें मुझे दरबार में । मैं अपने से नहीं जाता वहाँ ।`६९

इसी प्रसंग का चित्रण करते समय आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखते हैं ...

` मेरा सिर काटकर ले जाना चाहो तो ले जा सकते हो लेकिन मैं बादशाह के सामने अब नहीं आता । मुझे जानबूझकर बादशाह ने जसवन्त सिंह के नीचे खडा किया है, इसलिए मैं सिरोपाव भी नहीं पहनता ।` ७०

इस क्रोध का वर्णन करते समय यादवचन्द्र जैन लिखते हैं .....

` इस शर्म से तो आत्महत्या कर लेना ज्यादा अच्छा है, रामसिंह कहते कहते अत्याधिक उत्तेजना में शिवाराजा एक ओर को दुलक गए ।`[७१]

परमेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं ....

` और इसी समय उन्होंने सिंहासन की ओर पीठ कर ली और शाही महल के प्रांगण से बाहर जाकर एक खम्भे के पीछे बैठ गए ।`[७२]

इस स्वाभिमान का वर्णन करते समय मनहर चौहान लिखते हैं....

` आप खूब जानते हैं और आपके बादशाह भी जानते हैं कि मैं कैसा व्यक्ति हूँ । जान - बूझकर आपने मुझे अब तक खडा रखा है । मैं दरबार की खिलअत वापस करता हूँ । उन्होंने खूब के सामने खिलअत उतारी नीचे रखी और ढीठता से औरंगजेब की ओर पीठ करके उधर बढे जिधर खूबसे नीचे ओहदे के लोग खडे थे । वहाँ पहुँचकर वह देहाती की तरह जमीन पर बैठ गए ।`[७३]

शिवाजी के स्वाभिमान के काल्पनिक ढंग से वर्णन करते समय एम.के. पाध्ये लिखते हैं ...

` आलमगीर, सिंह भूखा मरना अच्छा समझता है, किन्तु घास खाना नहीं । यदि तुम्हें हमारी मित्रता स्थिर रखनी हो तो इस सभा में मुझे ऊँचे से ऊँचा स्थान मिलना चाहिए ।`[७४]

इस प्रकार उपन्यासकार बीजापुर दरबार और आगरा दरबार इन दो प्रसंगों द्वारा शिवाजी के स्वाभिमान का चित्रण करते हैं । आगरा दरबार में प्रकट किया हुआ क्रोध , इतिहास-सम्मत और मार्मिक है ।

स्वधर्माभिमान (हिंदुत्व) --

धर्म और संस्कृति उध्दारक :

स्वधर्माभिमान से ही शिवाजी के मन में ` हिंदवी स्वराज्य ` की स्थापना का विचार आता है । धर्म और संस्कृति को नाश से बचाने के लिए

वे स्वराज्य की स्थापना करते हैं । मुगलों की सेवा करना उन्हें पसंद नहीं । शहाजी चाहते थे कि उनका पुत्र भी उनकी तरह बादशाह की सेवा करें । शहाजी कहते हैं कि जिनका हम नमक खाते हैं उनके विरुध्द बोलना उचित नहीं । उस समय स्वधर्माभिमानी शिवाजी कहते हैं ...

' पिताजी, इस तरह की बात आप को नहीं बोलनी चाहिए । आपने उसका नमक खाया है, तो उसकी सेवा भी की है । वह आप का नमक दाता हो सकता है, जीवन-दाता नहीं । जीवन का संबंध सिर्फ नमक से ही नहीं है, धर्म और संस्कृति से भी है ।' ७५

पुरंदर संधि वार्ता के समय महाराजा जयसिंह शिवाजी से कहते हैं ....

' याद रखिए शिवाजी राजे, कल जो जाति भारत में हिन्दू राजराजेश्वर के पद पर विराजमान होगी, आप उसके स्त्रष्टा, निर्माता और गुरु हैं ।' ७६

शिवाजी अपने सैनिकों को इस कार्य का उद्देश्य समझाते समय कहते हैं ....

' आपको मालूम होना चाहिए कि यह युध्द आपकी मातृभूमि की स्वतंत्रता का युध्द है । यह युध्द आपके देश की आन-बान और शान का युध्द है । यह युध्द देश-धर्म और जाति के सम्मान एवं मर्यादा की रक्षा का युध्द है ।' ७७

हिन्दू-संगठक ---

हिन्दुओं को संगठित करनेवाले शिवाजी एक श्रेष्ठ नायक हैं । उन्होंने हिंदुओं के पुरुषार्थ को जगाया । हिंदुओं को संगठित करके यवनों को पराजित किया । स्वराज्य की स्थापना करते हुए हिन्दुओं को गौरवान्वित किया । संगठन शक्ति के द्वारा ही असंभव को संभव करके दिखाया । औरंगजेब की ओर से राजा जयसिंह शिवाजी को पराजित करने के लिए आते हैं । शिवाजी जानते थे कि इसमें हिंदुओं की हानि है । जयसिंह से संधि करके वे युध्द को रोकते हैं । इस प्रसंग में शिवाजी जयसिंह से कहते हैं ....

` हे वीर शिरोमणी, आप यदि दक्षिण को अपने लिए जय करना चाहते हैं, तो भवानी की तलवार आपको समर्पित है । मेरा मस्तक आपके चरणों में नत है । परंतु यदि आप उस पितृ-भ्रातृघाती, हिन्दू-विद्वेषी औरंगजेब के सेवक है तो महाराज, मुझे बताइए आप के साथ कैसा व्यवहार करूँ ? यदि तलवार उठाता हूँ तो दोनों ओर हिन्दू-रक्त गिरता है । आप मुझ दास से युध्द करके भलेही हिन्दू रक्त पृथ्वी पर गिराएँ पर मुझसे यह नहीं हो सकता । ` ७८

हिंदुत्व के कारण ही शिवाजी जयसिंह का आदर करते हैं । एम.के. पाध्ये लिखते हैं....

` बात काहते हुए शिवाजी बोले, ` आप मेरे पिता के समान हैं । मैं अपने पिता के समान आप का आदर करता हूँ । शत्रु के सेनापति के स्थान पर यदि आप एक स्वतंत्र राजपूत की स्थिति में आये होते तो आपके स्वागत के लिए मराठे अपनी आँखे बिछा देते । ` ७९

ऐसे प्रसंगों को के आधार पर उपन्यासकार शिवाजी के हिंदू - संगठन कार्य का वर्णन करते हैं ।

हिन्दू रक्षक ---

शिवाजी स्वयं को हिंदुओं के रक्षक मानते हैं, आचार्य चतुरसेन लिखते हैं ....

` वे गो-ब्राह्मण के शत्रु हैं, और मैं उन का रक्षक, मैं तो यही जानता हूँ । ` ८०

प्रस्तुत बात शिवाजी अपनी माता जीजाबाई के पास करते हैं । इस बात का जीवन में हमेशा पालन करते हैं । अफजलखाँ के दूत कृष्णाजी पंत से कहते हैं कि मेरी तरह आप को भी धर्म की ओर ध्यान देना चाहिए । मैं धर्म और संस्कृति का उध्दार करना चाहता हूँ अत: मेरी सहायता कीजिए ।

` मैं धर्म की ओर देखता हूँ, कर्त्तव्य की ओर देखता हूँ, गो-ब्राह्मणों की असहायावस्था की ओर देखता हूँ ।` [८१]

अफजलखाँ ने हिन्दुओं के सारे मंदिर तोड़ दिये थे । मंदिर की मूर्तियों को उखाडकर फेंक दिया था । उन मंदिरों में गाय का रक्त छिडका था । उन मन्दिरों की स्थापना शिवाजी करते हैं ।

` इसप्रकार वसन्तगढ, खेलना, पंगा, और उनके आस-पास के किलोंपर अधिकार कर लेने के बाद शिवाजी ने उन मन्दिरों में भगवान की मूर्तियाँ स्थापित की, जिनकी मूर्तियों अफजलखाँ की सेना ने उखाडकर फेंक दी थीं । और उन मंदिरो को जिनमें अफजलखाँ ने गाय का रक्त छिडका था, उन्होंने गंगा जल छिडक कर पवित्र किया ।` [८२]

महाराजा जयसिंह स्वयं हिन्दू थे । लेकिन वे राजपूत होकर भी यवनों की सेवा करते थे । फिर भी उनके मनमें धर्म की श्रध्दा थी । इस लिए जयसिंह शिवाजी से संधि करते हैं । जयसिंह कहते हैं .....

` मैं यह मानता हूँ कि आप हिंदू धर्म के संरक्षक हैं लेकिन मैं भी हिंदू धर्म का दुश्मन नहीं हूँ । तभी तो मैंने संधि के प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया ।` [८३]

पुरंधर संधि के वक्त शिवाजी जब महाराजा जयसिंह के सामने आत्मसमर्पण करते हैं और अपनी तलवार जयसिंह के हाथ में दे देते हैं, उस समय जयसिंह कहते हैं ...

` शिवाजी राजे, यह भवानी की पवित्र तलवार है । हिन्दू धर्म की रक्षक है । आओ, इसे मैं उपयुक्त स्थानपर अपने हाथों स्थापित करूँ ।` [८४]

इस प्रकार उपन्यासकार शिवाजी को हिंदू संरक्षक, हिन्दू उध्दारक और धर्म और संस्कृति के रक्षक के रूप में चित्रित करते हैं ।

धार्मिक उदारता ---

शिवाजी धार्मिक थे । वे हिन्दू धर्म के पूजक थे । साथ ही साथ अन्य

धर्मों का आदर भी करते थे । धार्मिक उदारता यह उनका खास गुण था । अन्य धर्म का उन्होंने कभी विरोध नहीं किया । यवनों ने अपने मनोरंजन के लिये लोगों की हत्या कर दी । शिवाजी ने ऐसा कभी हो नहीं किया । वे मुसलमान धर्म विरोधी नहीं थे । वे सिर्फ अन्याय का विरोध करना चाहते थे । शिवाजी आगरा में औरंगजेब के कैद में बन्दी थे । उस वक्त रामसिंह उनकी हिफाजत करते थे । औरंगजेब की बेटी औरंगजेब से कहती है .....

' अब्बाजान, आपने हिन्दू और मुसलमानों के शरीर को वश में किया किन्तु उनके हृदय को नहीं । शिवाजी हर जाति का आदर करनेवाला व्यक्ति है इसीलिये सब को प्रिय है । यदि ऐसी अवस्था में आपने शिवाजी का कत्ल किया, तो उससे प्रेम करने वाले हिन्दू मुसलमान आप से झगडा करने को खडे हो जायेंगे ।' [८५]

शिवाजी में सांप्रदायिकता नहीं थी । यादवचन्द्र जैन लिखते हैं ....

' मैं सांप्रदायिक भी कदापि नहीं हूँ । हाँ मुझे सांप्रदायिकवादियों से मोर्चा अवश्य लेना है । मैं पूर्णत: स्वतंत्रता के युध्द का एक सिपाही हूँ । -- वैसा ही सैनिक जैसा किसी भी देश के स्वतंत्रता के युध्द का कोई सैनिक होगा ।' [८६]

शिवाजी असाम्प्रदायिक थे । इस उदाहरण के लिये पूना में अपने महल के सामने एक मस्जिद बनवायी थी । इसका वर्णन यादवचन्द्र जैन करते हैं ....

' उनकी सबसे बडी विशेषता थी उनका असाम्प्रदायिक होना । कठिन साम्प्रदायिकता के लोह को काटने के लिए उस वातावरण में उनकी वैसी असाम्प्रदायिकता इतिहास की अनहोनी घटना ही है । उन्होंने पूना में अपने महल के सामने ही अपनी इस असाम्प्रदायिकता के प्रतीक रूप में एक मस्जिद का निर्माण कराया था ।' [८७]

उपन्यासकार ने इसप्रकार शिवाजी की धार्मिक उदारता का सही चित्रण किया है ।

वीरता ---

शिवाजी जनकल्याण करना चाहते है । जिस हिन्दू धर्म का -हास

हो रहा है, उसे बचाना चाहते हैं । मुग़ल मनमाने अत्याचार हिन्दुओं पर कर रहे थे । उस अत्याचार का विरोध करने के लिए शिवाजी ने हाथ में तलवार ले ली थी । शिवाजी में वीरता और साहस जो दो श्रेष्ठ गुण थे । डॉ. भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं ।.....

` शिवा के समान शैतान तो सौ-हजार वर्षों में कभी-कभी पैदा होते हैं । और हम मानें या न मानें शिवा की वीरता और साहस की मिसाल तो पीछे के कई सो वर्षों की तवारीख में ढूंढे नहीं मिलने की । खैर वह हमारा दुश्मन तो है ही और दुश्मन को किसी प्रकार भी शिकस्त देना हमारा फर्ज ।` [८८]

अफजलखाँ का वध यह शिवाजी की वीरता और साहस का अच्छा उदाहरण है । इस महान पराक्रम का वर्णन करते समय मनहर चौहान लिखते हैं....

` अगले ही क्षण एक भयानक चीख कुंज में गूंज उठी । लेकिन यह चीख शिवाजी की नहीं, अफजलखाँ की थी । इस के पहले खिखाँ कटार का वार कर पाता, शिवाजी ने उसकी अंतडियाँ बाहर निकाल दी थीं । यह काम इतने चमत्कारिक ढंग से हुआ था कि कई क्षण तक दोनों पक्षों के अंग रक्षक पुतलों की तरह खडे रह गए ।` [८९]

मनहर चौहान ने ही एक दूसरे प्रसंग में भी शिवाजी की वीरता का वर्णन किया है । शाहिस्ताखाँ पर शिवाजी ने जो हमला किया वह वीरता काही उदाहरण हैं । ....

` यह तलवार थी शिवाजी की, ` भवानी ` । हुंकारकर शिवाजी शाइस्ताखाँ की ओर झपटे । उसी समय करीब दस रक्षक बीच में आ गए । शिवाजी ने उन सब को बिछा दिया, लेकिन इसमें जो समय लगा, उसमें शाइस्ताखाँ खून से सनी हथेली को दबाकर कहीं छिप गया था ।` [९०]

इसी प्रसंग का वर्णन करते समय यादवचन्द्र जैन लिखते हैं ....

` तभी पच्चीस सौ जवानों को लेकर शिवा पूना की ओर बढ चले । एक भारी कामथा : टेढी खीर थी । हिम्मतवालों का ही काम था । वह हिम्मत शिवाजी में ही थी ।` [९१]

उपन्यासकार ने शिवाजी की वीरता का वर्णन करते समय हिम्मत का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से किया है। फिर भी उपन्यास साहित्य में शिवाजी की वीरता का वर्णन सामान्य स्तर का हो गया है।

रणनीति --

हिन्दु रणमैदान से भागना गौरवहीन मानते थे। वे युध्दभूमि में कट मरते थे लेकिन अपने को बचाने के लिए नए तंत्र का अवलंब नहीं करते। शिवाजी ने परंपरागत धर्मयुध्द की नीति छोडकर युध्द की नई नीति बनाई।

भेदनीति ---

शिवाजी ने हमेशा युध्द के पहले ही शत्रु को कमजोर बनाने का सफल प्रयास किया है। शिवाजी ने यह जान लिया था। अत: वे भेदनीति से शत्रु में फूट डालकर उनको कमजोर बनाते थे। इस भेदनीति का सुंदर वर्णन उपन्यासकार यादवचन्द्र जैन ने किया है।

' बीजापुर के बादशाह ने शिवाजी के पिता शाहजी को बंदी बनाता है। तब शिवाजी संकट में पड जाते हैं। तीन हजार की सेना की सहायता से छ: हजार की सेनावाले पठानों को हराते हैं। इस से शिवाजी की रणनीति स्पष्ट हो जाती है। युध्द जीतने के बाद बादशाह शाहजहाँ को पत्र लिखकर उनकी सेवा का वचन देते हैं। शाहजहाँ शाहजी की मुक्तता के लिये बीजापुर के शाह को पत्र लिखते हैं। और शाहजी की रिहाई होती है। यह भेदनीति का ही श्रेष्ठ उदाहरण है।

' तत्काल ही शिवाने मुगल सल्तनत का दरवाजा खटखटाने की बात सोची और मध्यभारत के सूबेदार शाहजादा मुराद से बक्स को उन्होंने पत्र लिखकर अनुरोध किया कि बीजापुर सुल्तान पर अपना प्रभाव डालकर उनके पिता की मुक्ति का प्रयत्न करें, जिसके बदले में वे उन के सहायक व मित्र बनकर उनकी सरहदों की रक्षा करेंगे।' [१२]

भेदनीति से पिता को मुक्ति हो जाती हैं । लेकिन उनके सामने दूसरा सवाल खडा हो जाता हैं मुगलों की सेवा करना इसका अर्थ यह हो जाता हैं कि स्वराज्य का सपना छोड देना ? इस सवाल को हल करने को लिए बार-बार मुअलशाह को पत्र भेजते रहते हैं और इसमें सफलता पाते हैं ।

` इस प्रकार शिवा राजाकी वह राजनीति तो काम कर गयी । अब प्रश्न रहा गया मुअलशाह से क्षतपूर्ति का उसके लिए शिवा राजा समय-समय पर चापलूसी भरे पत्र दिल्ली भेजते रहते थे जिससे दरबार का ध्यान बँटा रहे ।'[१३]

इस प्रकार शिवाजी ने भेदनीति से विजय पायी हैं ।

सावधानता --

शिवाजी का सावधानता यह गुण बहुत महत्वपूर्ण हैं । जलदबाजी से कार्यहानि होने की संभावना होती हैं । इसलिये शिवाजी ने हर कार्य से पहले सावधानता का आश्रय लिया हैं । अफजलखाँ से मिलने जाते समय वे सावधान होकर जाते हैं इसलिए बच जाते हैं । डॉ. भगवताशरण मिश्र लिखते हैं ....

` शिवाजी को यह आलिंगन बडा कष्टकर लगा पर उन्होंने समझा कि अफजल ने अनजाने में ऐसा किया हैं और वह शीघ्र ही उन्हें अपने बाहुपाश मुक्त कर देगा । पर उसने ऐसा किया नहीं और उसकी पकड और मजबूत हो गई जिससे शिवाजी को लगा कि उनकी सांस घुट रही हैं । दूसरे ही क्षण उन्हें अपनी छाती के पास थोडा दर्द मालूम पडा और किर की आवाज हुई । उन्होंने आँखे मोडकर देखा तो पाया कि अफजल ने कमर से लटकती अपनी खंजर हाथ में ले रखी थी । वे समझ गए कि उसने खंजर चला दी थी पर उनके शरीर पर कवच के कारण उसका वार व्यर्थ गया था ।'[१४]

इसी प्रसंग का वर्णन करते समय परमेश्वर प्रसाद सिह लिखते हैं....

` सर्व प्रथम अफजलखाँ ने शिवाजी का गला घोंटने के लिए कुछ नीचे झुका, तत्पश्चात उसने अपनी तलवार निकाली और शिवाजी के बगल में प्रहार

किया । किन्तु, हाय ! प्रहार निष्फल गया और तलवार भी टूट गई, क्योंकि शिवाजी अंगरखे के नीचे कवच पहने हुए थे ।' १५

शाहिस्ताखाँ पर छापा मारते समय शिवाजी ने सावधानता से कार्य किया है । रमजान महिना होने के कारण शिथिलता की परिस्थिति थी । शिवाजी ने अधिकतर हमले मुसलमानों के धार्मिक दिनों में ही किए हैं । यह उनकी सावधानता का सुंदर उदाहरण है । डा. भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं....

' रमजान के दिन चल रहे थे । शाम ढलते ही खा-पीकर शिबिर के लोग सुख-निद्रा में लीन हो गए थे । रसोईघर में कुछ खटपट अवश्य थी । शिवाजी और उनके सहायकों ने रसोई के खुले दरवाजे से देखा, तीन चार बावर्ची काम में जुटे थे । किरण पुनने के पहले के कलेवे के प्रबन्ध में लगे थे वे । इस के पहले कि वे कुछ सोच पाते और शोर - शराबा करते उन्हें तलवार के घाट उतार दिया गया ।' १६

इसी प्रसंग का वर्णन करते समय यादवचन्द्र जैन लिखते हैं....

' आज रमजान का छठा दिन था । दिनभर ही व्रत-उपवास रहा था । धर्म-कर्म के बाद शाम की नमाज हुये देर हो चुकी थी । रात अंधियारी का घूँघट ओढे हुयी थी । खाना भरपेट खाया गया था, तभी लोगों के खूब सुस्ती ने घेर लिया था ।' १७

शाहिस्ताखाँ पर छापा मारने के बाद यहाँ अधिक देर रुकना खतरा था । सावधान शिवाजी कार्य सफल होते ही तुरंत लौटते हैं ।

' शिवाजी की मुराद पूरी न हो सकी । शाहस्ताखाँ को खोजने का मतलब मौत को बुलाना था, क्योंकि शोर के कारण मुगल सेना जमा होने लगी थी और शिवाजी के वीरों की संख्या कुल ही पचास ही थी । अब तो केवल भाग निकलने में ही बुध्दिमानी थी ।' १८

औरंगजेब से मिलने के लिए शिवाजी को आगरा जाना था । उस समय भी वचन के पक्के महाराजा जयसिंह से सुरक्षा का वचन लेते हैं । डा. भगवती-शरण मिश्र लिखते हैं.....

` उसके लिए मैं वचन देता हूँ ` जयसिंह ने कहा, ` मेरा बेटा रामसिंह केवल आपकी सुरक्षा ही नहीं आपकी सम्मान रक्षा के लिए भी जिम्मेदार होगा। मैं मुगल बादशाह को लिखित रूप में सूचित कर रहा हूँ कि आपका किसी प्रकार का अपमान मिर्जा राजा का अपमान माना जायेगा क्योंकि उसने आपकी जान और इज्जत दोनों की रक्षा की जिम्मेदारी ली हैं। ` [९९]

इस प्रसंग की जानकारी अलग - अलग ढंग से उपन्यासकारोंने दी हैं। मनहर चौहान लिखते हैं ....

` जयसिंहने औरंगजेब से वार्ता चलाई और सुरक्षा का पूरा विश्वास हो जानेपर यह जिम्मेदारी ले ली। जयसिंह के बडे बेटे रामसिंह ने भी वचन दिया कि वह शिवाजी की सुरक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व लेता हैं। ` [१००]

उपन्यासकारों ने शिवाजी की सावधानता का वर्णन विस्तार से और प्रभावी ढंग से किया हैं।

सैनिकों का भाई ---

अन्य मुघल सम्राटों की तरह शिवाजी अपने सैनिकों को सेवक नहीं मानते थे। शिवाजी के साथ लड़ने वाले वीर सैनिक शिवाजी को भाई के समान प्रिय थे। शिवाजी के इस व्यवहार में संतोष मानकर सैनिक जान की बाजी लगाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। बालसखा तानाजी अपनी जान की बाजी लगाकर युद्ध करते हैं, विजय प्राप्त करते हैं। इसमें तानाजी वीरगति प्राप्त करते हैं तब शिवाजी अपना शोक रोक नहीं सकते। इस शोक से अन्य सैनिक प्रभावित होते हैं।

` शिवाजी अपने घोडेपर सवार होकर पधारे। आज्ञा हुई ... जीजाबाई का एक शिवा चला गया और दूसरा यहाँ पर खडा हैं। कितना अच्छा होता यदि यह भी इसी के साथ ... और कहकर शिवाजी तानाजी के शवपर गिर गए। अधिकांश सैनिकों के मुखार बिन्द से एक ही वाक्य निकल रहा था -- ` उपर से पत्थर और अन्दर से मोम। हमारे हृदय-सम्राट महाराज नहीं, देवता हैं।

सेनापति के लिए इतना दर्द ।`[101]

इसी प्रेम के कारण शिवाजी राज्याभिषेक के समारोह में अपने शहीद सैनिकों के घरवालों को धन सहायता घोषित करते हैं ।

` कुछ अपाहिजों या मृत कों के घरवालों को पेंशनें घोषित की गयीं ।[102]

इस प्रकार उपन्यासकारने शिवाजी का एक सैनिक का सहृदय भाई के रूप में अत्यंत सुंदर चित्र खींचा है ।

कठोर अनुशासन --

यवनों ने अपने शौर्य से समस्त भारत को पराजित किया । शौर्य के साथ-साथ अनाचार से उन्होंने भारत में ऊधम मचा डाला । सारे वीर पुरुष अनैतिकता की खाई में गिरने लगे । इस विलासिता संपन्न जीवन के विरोध में सदाचार संपन्न सेना का संगठन किया । शिवाजी का सेना के लिए कठोर आदेश था कि वह किसी अबला को तकलीफ न दें । अगर कोई इस नियम का उल्लंघन करता तो उसकी गर्दन मारी जाती थी । कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधु का आदर शिवाजी इसी कारण करते हैं ।

` उसके बाद शिवाजी राजे ने आबाजी सोनदेव को एक लम्बी डॉट पिलाई और अपनी समस्त सेना में कड़ाई से हुक्म दिया कि कभी भी कोई सैनिक किसी स्त्री के साथ कोई दुर्व्यवहार न करे अन्यता उस के साथ भी सख्त कार्यवाही की जायेगी । यों कल्याण के सूबेदार मौलाना अहमद की भानजी के साथ तो कोई दुर्व्यवहार हुआ भी नहीं था ।`[103]

कठोर अनुशासन ही किसी राज्य का ठोस आधार होता है । इस गुण को शिवाजी अपने सैनिकों के मनमें भर देते हैं । इसी कारण वे विजयी बन जाते हैं ।

रणनीति चातुर्य ---

वेष्टांतर की चाल ---

आधुनिक सेना में वेष्टांतर करके शत्रु को ठगाया जाता है । शिवाजी ने तीन सौ साल पहले वेष्टांतर का प्रयोग किया था । शिवाजी छापामार नीति के प्रवर्तक है । इस नीति से शिवाजी सहजता से शत्रुपक्ष की जानकारी प्राप्त करते थे । कभी कभी शिवाजी स्वयं वेष्टांतर करके शत्रु की छावनी में घुस जाते थे । अत्यंत चातुर्य से इस प्रकार का कार्य वे सफल बनाते थे ।

शाहिस्ताखॉ पर आक्रमन करते समय शिवाजी ने वेष्टांतर की चाल से मुघल दल का भेद किया था ।

` जो दो सौ मराठे बाहर रह गये थे उन्होंने महल में जैसा अपना राज्य स्थापित कर लिया । उनकी पोशाकें भी कुछ मुगल सेना से मिलती जुलती थीं । .... तब ये मराठे बॅड वालों के कैम्प में गये और ऐसे हुक्म दिया जैसे खान दे रहा हो ...

ऐ । बजाओ बॅड ।

और बॅड बजने लगा । उस शोरगुल और ढोल-तासों की चीखचिल्लाहटों के बीच दुश्मन की पुकारें और चीखें दब गयीं ।` [१०४]

शिवाजी ने वेष्टांतर की चाल का प्रयोग आगरा से भागते समय भी सफलता से किया था । अपने सौतेले भाई हिरोजी फर्जंद को अपना वेष देकर शिवाजी भाग जाते है । इस सबन्ध में डा. भगवतीशरण मिश्र लिखते है ....

` फिर हिरोजी और शिवाजी ने अपने अपने पोशाक बदले और हिरोजी अपना कडा वाला हाथ लटका कर पलंग पर लेट गया । हिरोजी शिवाजी का सौतेला भाई था अत: उसका रंग और डील - डौल बहुत हदतक शिवाजी से मिलता था । पोशाकों को बदलते समय शिवाजी का विश्वस्त

सहायक मदारी वहाँ उपस्थित था । सम्भाजी भी वहाँ खड़े-खड़े यह तमाशा देख रहे थे ।`[१०५]

इस प्रसंग का वर्णन परमेश्वर प्रसाद सिंह करते हैं ....

`शिवाजी के एक सौतेले भाई थे । उनका नाम हीरोजी फर्जंद था । उनकी आकृति शिवाजी से बहुत-कुछ मिलती-जुलती थी । जिस समय शिवाजी टोकरी में बैठ रहे थे, उसी समय हीरोजी फर्जंद को मराठा सरदार के सोने का कड़ा पहनाकर शिवाजी के बिस्तरपर लिटा दिया था ।`[१०६]

आगरा से भागते समय रास्ते में एक मुगल दारोगा शिवाजी को पहचानते हैं । इस प्रसंग में रिश्वत देकर मुक्ति करा लेते हैं । शिवाजी कहते हैं ....

`मेरे जूतों में दो वेश कीमती नगीने हैं । एक हीरा और दूसरा लाला, उनकी कीमत लाख रुपये से ज्यादा ही होगी । इतना तुम्हें मुझे पकड़वाने पर शाहजाह से नहीं मिलेगा । चाहे तो सौदा कर लो ।`[१०७]

आगरा से भागते समय युवराज संभाजी को पीछे रखा था । महाराष्ट्र में आ जाने के बाद संभाजी की मौत की अफवाह फैला देते हैं । परिणाम स्वरूप मुघल बेखबर रहते हैं । शिवाजी ने इस रणनीति का सफलता से प्रयोग किया हैं ।

`सचमुच शिवा राजा ने यह अफवाह फैला रखी हैं कि शम्भूजी रास्ते में मर गया । इससे शम्भूजी की रक्षा भी होगी और इस शोक का ध्यान कर मुगलों की बेखबरी में शिवा राजा अपने अगले हमलों की खामोशी से तैयार करेंगे ।`[१०८]

औरंगजेब जैसा कुटिल और धूर्त बादशाह भी शिवाजी को हरा न सका । शिवाजी के इस ~~अद्भुद~~ चातुर्य प्रशंसा करते समय आचार्य चतुरसेन लिखते हैं ....

`औरंगजेब जैसा सुभट साहसी योध्दा था, उसका सामना करनेवाले वीर तो राजपूतों में थे, परन्तु उस जैसे कुटिल धूर्त की धूर्तता से समता करनेवाला कोई हिन्दू सरदार न था । शिवाजी ही ऐसे पहले हिन्दू थे जो कांटे से काँटा निकालने में चतुर थे ।`[१०९]

इस प्रकार उपन्यासकार शिवाजी की रणनीति का वर्णन करते समय

उनकी सावधानता ,भेदनीति,साथियों से प्रेम, कठोर अनुशासन का अत्यंत मार्मिक और सुंदर वर्णन करते हैं । शिवाजी की रणनीति वर्णन में उपन्यासकार सफल हो गये हैं । इस वर्णन से शिवाजी की प्रतिभा प्रभावी बनती है ।

धाक ---

बीजापुर पर ---

उपन्यासकार धाक वर्णन मे शिवाजी की वीरता का वर्णन करना चाहते हैं । शिवाजी की शक्ति को दबाने के लिए बीजापुर बादशाह दरबार बुलाता है । शिवाजी को नष्ट करने वाले को इनाम की घोषाना करता है । शिवाजी का नाम सुनते ही दरबार में जो भयभीत अवस्था निर्माण हो जाती है, उसका चित्रण करते समय परमेश्वरप्रसाद सिंह लिखते हैं .....

` कहते हैं, घोषाना सुनने से पहले युध्द करने के लिए सभी सेनापतियों एवं सेनाओं की भुजायें फडक रही थी, किन्तु जैसे ही शिवाजी का नाम सामने आगया सभी शांत और शीतल हो गये मानो सभी रक्त-हीन हो गए, सबके पाँव तले से धरती सिसक गयी । सभी एक दूसरे की ओर देखने लगे मानों सभी एक-दूसरे से दया की भिक्षा माँग रहे हों । ऐसा लग रहा था जैसे सब के सब पीले पड गए हों, जैसे किसी के चेहरे पर रोशन ही न हो, जैसे सब-के-सब बिखडे जमाल (सौन्दर्य) लेकर किसी की कब्रपर चिराग जलाने जा रहे हो ।` [११०]

अफजलखाँ भरी सभा में शिवाजी के विरुध्द बिडा उठाता है । तब दरबार में बैठे अन्य लोग इस संकट के बारेमें बाते करते हैं । डा.भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं ....

` यह कौन-सी बला मोल ली अफजल ने अपने ऊपर ? हाथी, घोडे बहे जाएँ, गधा कहे कितना पानी ? जब बडे-बडे शूरमा शिवा के नाम से कांपते हैं तो किस खेत की मूली बन चला है यह उसे पकड लाने ?` [१११]

यहाँपर बीजापुर दरबार का वर्णन करते हुए उपन्यासकार ने शिवाजी

की धाक का सुंदर वर्णन किया हैं ।

अमारों पर धाक --

शिवाजी अमीरों पर आक्रमण करते थे और उनका धन लूटते थे । सूरत पर जब शिवाजीने आक्रमण कर दिया । उस वक्त सूरत के व्यापारी अपना धन छोडकर निकल गये ।

` गन्डवी में मराठा सरदार के आगमन की सूचना बात-की-बात में दावानल की तरह पूरे सूरत नगर में फैल गई और जैसे मधुमक्खियों के छत्ते में धुआ लगने से उनमें भगदड मच जाती हैं उसी तरह पूरे नगर के लोग आंतकित और भय-ग्रस्त हो अपने-अपने घरों को छोड चले । धन और सम्पत्ति की चिन्ता छोड लोग अपने प्राणों की कोशिश में किसी भी उपलब्ध साधन से नदी के पार भाग खडे हुए ।` ११२

औरंगजेब पर धाक --

शिवाजी के कार्य से औरंगजेब भयभीत हैं । आगरा दरबार में शिवाजी को अवमानित करके नष्ट करना चाहते हैं । औरंगजेब जानता हैं कि शिवाजी यहाँ से निकल गया तो मुघल साम्राज्य का अन्त दूर नहीं । एम.के.पाध्ये लिखते हैं ....

` शिवाजी वास्तव में वीर हैं, स्वाभिमानी हैं । कल दरबार में ऐसी कोई बात हो जाए, जिससे वह क्रुध्द हो जाए । तब मैं कानून के शिकजे में बाँध कर उसका नाश कर दूँगा । शिवाजी का नाश मुघल साम्राज्य को अमर कर देगा । यदि कहीं पहाडी सिंह मेरे पंजों से निकल कर दक्षिण पहुँच गया, तो मुघल साम्राज्य का अन्त दूर नहीं ।` ११३

उपन्यासकार शिवाजी की धाक वर्णन से शिवाजी के शौर्य और वीरता का वर्णन करना चाहते हैं । इस प्रकार उपन्यासकारों ने शिवाजी की धाक का वर्णन अत्यंत संक्षिप्त किया हैं ।

नैतिकता --

सदाचार का रक्षक --

शिवाजी में राजा का पराक्रम और कृषि की नैतिकता ऐसे दो श्रेष्ठ गुण दिखाई देते हैं । शिवाजा ने अपनी वीरता का उपयोग जन-कल्याण के लिए किया हैं । इसी कारण वे सूरत लूटकर सिंधुदुर्ग का निर्माण करते हैं । उनके लिए प्रजाहित और सदाचार ही श्रेष्ठ था ।

जन-कल्याण की व्यापक भावना के कारण ही शिवाजी के राज्य में शराब का विरोध था । अत: शत्रु कहते हैं कि शिवाजी के राज्य में शराब मिलना कठिन हैं ।

` शिवाजी जैसे शराब के घोर विरोधी के राज्य में शराब प्राप्त करना ...।`[११४]

नशा और कांता से वे स्वयं दूर थे । वे सदाचार का पालन करते थे ।

` शिवाजी का कहना हैं कि शराब और औरतें अच्छी चीजें नहीं हैं - खासकर उन के लिए जो किसी राजा या बादशाह के सबसे बड़े बेटे हो ।`[११५]

इस प्रकार शिवाजी सदाचारी जीवन को ही महत्व देते थे । शिवाजी मानते हैं कि भोग और विलास से राज्य का नाश होता हैं और सदाचार से राज्य की वृध्दि होती हैं ।

मातृवत पर-स्त्री का सम्मान --

शिवाजी पर स्त्री को माता के समान मानते थे । कल्याण की सूबेदार की पुत्रवधु गौहरबानू का माता के समान सम्मान करते हैं । और सकुशल उसे अपने घर भिजवाते हैं ।

` ज्योंही उसका बुर्का हटा, त्योंही शिवाजी ने सभा की ओर संकेत करते हुए कहा कि ऐ ईश्वर की मासूम छाया, यदि तू मेरी माता होती, यह शिवाजी संसार को तुम जैसा सुंदर दीखता ।`[११६]

इसी प्रसंग का वर्णन करते समय परमेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं ---

` कुछ देर रुककर कुछ सोचते हुए शिवाजी ने कहा देवि ! इसमें कोई शक नहीं कि तुम बहुत सुंदर हो । काश ! हमारी माँ भी तुम्हारी तरह सुंदर होती । इससे हमें भी तुम्हारे इस रूप का कुछ वरदान मिल जाता और तब तो निःसंदेह मैं भी बड़ा रूपवान होता ।` ११७

उपन्यासकार का उपर्युक्त वर्णन काल्पनिक है । फिर भी शिवाजी की नैतिकता को हम गलत नहीं कह सकते । इतिहास के गहरे अध्ययन के अभाव में उपन्यासकार अन्य सत्य प्रसंगों का चित्रण कर न सके हैं ।

अबला रक्षक --

शिवाजी ने अपने सैनिकों के लिए कुछ नीति - नियम बनाये थे । उनका शासन भी कठोर था । कोई भी सैनिक किसी स्त्री को उठाकर नहीं ला सकता था । युध्द में अबलाओं को अगर कोई सैनिक तंग करता है, तो उसकी गर्दन उतारी जाती थी । कल्याण के सूबेदार की पुत्रवधु का सम्मान शिवाजी इस कारण कर सके हैं । ....

` उसके बाद शिवा राजेने आबाजी सोनदेव को एक लम्बी डाँट पिलाई और अपनी समस्त सेना में कड़ाई से हुक्म दिया कि कभी भी कोई सैनिक किसी स्त्री के साथ दुर्व्यवहार न करे अन्यथा उसके साथ भी सख्त कार्यवाही की जायेगी यों, कल्याण के सूबेदार मौलाना अहमद की भानजी के साथ तो कोई दुर्व्यवहार हुआ भी नहीं था ।` ११८

प्रशंसा --

शिवाजी की नैतिकता और सदाचार से ही प्रभावित होकर औरंगजेब भी उन की प्रशंसा करते हैं । स्वयं औरंगजेब ही कहता है .....

` राज्य के प्रश्न में शिवाजी मेरा जानी शत्रू है । उसके डरसे मुझे नींद नहीं आती, परन्तु वह एक पवित्र और चारित्रवान व्यक्ति है । कल्याण के सूबेदार की बहु को जिसने आदर से माँ कहकर वापस भेजा, उसकी नियतपर संदेह करना खुदा की सत्तापर सन्देह करना है ।` ११९

इस प्रकार उपन्यास साहित्य में शिवाजी की नैतिकता का वर्णन करते समय उन्हें सदाचार का रक्षक, मातृवत पर-स्त्री का सम्मान करनेवाले, अबला रक्षक के रूपमें चित्रण करके शिवाजी की प्रशंसा की हैं । उपन्यास साहित्य में नैतिकता का सुंदर चित्रण किया हैं ।

राष्ट्रभक्त शिवाजी ---

शिवाजी भारतीय राष्ट्रवाद के जनक हैं । शिवाजी के बाद के नेताओं ने शिवाजी का आदर्श लेकर स्वतंत्रता का आंदोलन उठाया और सफलता प्राप्त की । इसलिए शिवाजी राष्ट्रवाद के जनक हैं ।

अंधकार में तेजस्वी सूर्य के समान शिवाजी का कार्य हैं । शिवाजी स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं । शिवाजी ने व्यक्तिगत सुख न देखकर देशप्रेम के कारण उन्होंने निराला रास्ता अपनाया ।

` यों शाहजी भली प्रकार समझ चुके थे कि लडका पूरी तरह स्वतंत्र विचारों का हैं और गति-विधि में उनसे पूरा मतभेद रखता हैं ।` [१२०]

गुलामी से नफरत --

शिवाजी ने यह देखा कि विदेशी सत्ता के अत्याचार के कारण धर्म, संस्कृति और स्वाभिमान का -हास हो रहा हैं । इसलिए वे गुलामी के विरुध्द स्वातंत्र्य की घोषाना करते हैं ।

` आज हमारे आर्यावर्त की प्रतिष्ठा खतरे में हैं । विदेशी हुकूमत ने हमारे दिल और दिमाग को गुलाम बना दिया हैं । हमारे परम आराध्य राम और कृष्ण के पावन मंदिरों में गाय के मांस और रक्त छिडके जा रहे हैं और हम हाथ-पर-हाथ रख कर बैठे हैं । क्या यही हमारी देश-भक्ति हैं ? क्या यही हमारा स्वधर्म आचरण हैं ? ` [१२१]

राजा जयसिंह वीर होकर भी सुख के मोह में पडकर अपने भाईयों का सिर काट रहा है । इस परिस्थिति को देखकर शिवाजी बस गुलामी के बंधन को तोडने का संकल्प करते हैं ।

शिवाजी कहते हैं ....

` गुलामी कितनी बुरी होती है । जयसिंह गुलामी से बंधा होने के कारण अपनी मातृभूमि के लाडलों का सिर काट रहा है ।` [१२२]

शिवाजी प्रथम नायक हैं जिन्होंने आत्मविश्वास के साथ इस स्वतंत्रता का युध्द शुरू किया । यही आत्मविश्वास उनकी महान शक्ति थी ।

` सौभाग्य - दुर्भाग्य मन मानकर बैठ रहने का मजा भर है । हम अपनी धरती के आप मालिक हैं । हम अपने राष्ट्र के निर्माता हैं । नायक हैं । हम अपनी स्वतंत्रता के बनानेवाले - उस के रक्षक हैं । हमें कोई मोड नहीं सकता । अन्याय के समक्ष हम दब नहीं सकते । अन्याय का हम मुँह नोच लेंगे । हम विदेशी शासन का दर्प चूर कर देंगे । हम अपना राज्य स्थापित करेंगे । हम स्वराज्य की स्थापना के एक संस्थापक बनेंगे ।` [१२३]

शिवाजी गुलामी विरोधी थे, इसलिए वे स्वतंत्रता का कार्य करते हैं ।

मातृभूमि रक्षक --

मुसलमानों के अत्याचार से सारा जन-जीवन पीडित था । हिन्दुओं का जीवन अस्थिर बन गया था । सम्मान और आवरन सुरक्षित नहीं थी । अत: शिवाजी अपने साथियों को अत्याचार के विरुध्द शस्त्र उठाने की प्रेरणा देते हैं । इसप्रकार लोगों को उत्साहित करते हुये मातृभूमि की रक्षा की प्रतिज्ञा करते हैं ।

` कसम खाइये कि अपने देश और धर्म के लिए जीवन होम कर देंगे । मातृभूमि की रक्षा करेंगे । विदेशी शासन को नष्ट कर देंगे । जूझा जायेंगे ।` [१२४]

शिवाजी ने यह घोषणा कर दी कि यह देश हमारा है । इस देशपर हमारा अधिकार है । इन अत्याचारी यवनों को पराजित करके हम अपनी स्वराज्य की स्थापना करेंगे ।

` ये सीमायें हमारी है, देश की है - विदेशियों की नहीं है, मुगलों की नहीं है । अत्याचारी विदेशी शासक के अपमानों को हम सहन नहीं कर सकते । हम अपना राज्य स्वयं करेंगे । हमें स्वराज्य चाहिए । हम स्वराज्य लेकर रहेंगे । ले रहे है ।` [१२५]

शिवाजी ने लोगों को समझाया कि गुलामी के विलासी जीवन से स्वाभिमानी जीवन श्रेष्ठ होता है । इसी प्रेरणा से शिवाजी ने लोगों को स्वातंत्र्य-संग्राम के लिए उत्साहित किया ।

` देखो अपनी आँखों से अपनी दुर्दशा देखो - याद रखो, जलमें निवास करनेवाली मछली , दूध में निवास नहीं कर सकती । यदि दुश्मन तुम्हें दूध का लोभ देता है, तो समझो कि विष है, अमृत नहीं । जिसप्रकार जलमें निवास करनेवाली मछली जलमें ही आनंदपूर्वक जीवन-यापन कर सकती है, उसी प्रकार जिस देश में तुम्हारा जन्म हुआ है, जिस जाति में तुम्हारा जन्म हुआ है, और जिस धर्म में तुम्हारा जन्म हुआ है, उसी देश, जाति और धर्म के अन्तर्गत तुम्हारा जीवन सुखी रह सकता है ।` [१२६]

इस प्रकार शिवाजी ने लोगों के मनमें गुलामी से नफरत निर्माण करके लोगों के हृदय में स्वाभिमान को जगाया । इसी शक्ति के द्वारा शिवाजी ने देश और धर्म का रक्षण किया ।

जातीय अन्दोलन नहीं राष्ट्रीय अन्दोलन निर्माता ---

शिवाजी ने यवनों के विरुध्द अन्दोलन किया और देश को स्वतंत्र किया । शिवाजी का अन्दोलन यह जातीय अन्दोलन नहीं था । शिवाजी मुसलमान जाति विरोधी नहीं थे । शिवाजी ने सिर्फ अत्याचारियों के विरुध्द अन्दोलन किया । शिवाजी कहते है .....

' मुझे धर्म की दुहाई देनेवाला कौन कह सकता है । उस समय इस बातपर आप सब मुझसे बिगडे भी थे । मैं केवल मात्र मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लडा हूँ और लडता रहूँगा । हमारी जाति या धर्म कुछ भी हो उस से क्या फर्क पडता है ।' १२७

शिवाजी स्वयं सांप्रदायिक नहीं थे । सांप्रदायिक यवनों के विरुध्द उन्होंने युध्द किया है ।

' मैं सांप्रदायिक भी कदापि नहीं हूँ । हाँ मुझे संप्रदायवादियों से मोर्चा अवश्य लेना पडता है । मैं तो पूर्णत: स्वतंत्रता के युध्द का एक सिपाही हूँ ..... वैसा ही सैनिक जैसा किसी भी देश के स्वतंत्रता के युध्द का कोई सैनिक होगा ।' १२८

शिवाजी ने जीवनभर सच्चे दिल से देशकार्य किया था । इस देश से यावनी अंधकार को दूर किया । देश को गुलामी से स्वतंत्र किया । और अपना राज्याभिषेक करके स्वतंत्रता की ज्योत जलाई । इसी कारण शिवाजी को संतोष था । अत: मृत्यु शैया पर वे कहते हैं ....

' मैं बहुत खुश हूँ .... जीवन-भर मैं जन्मभूमि के लिए लडता रहा ।' १२९

शिवाजी कहते हैं कि यह लडाई स्वार्थ की नहीं है । यह किसी एक व्यक्ति के लिए लडाई नहीं है, पूरे हिन्दू जाति के उध्दार के लिए है । भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं.....

' यह तो आप ही कहेंगे कृष्णाजी । मुझे तो जो लगा मैंने कह दिया । हाँ एक बात अवश्य कहूँगा । मेरी लडाई किसी व्यक्ति या किसी राज्य विशेष से नहीं है और न यह स्वार्थ की ही लडाई है । मैं तो उन सारी शक्तियों से लड रहा हूँ जो शासक और धर्म विरोधी हैं, जिन्होंने हमें दास और दुर्बल बनाकर रखा है , जो हमारी संस्कृति और सभ्यता के लिए चुनौती बनकर खडी हैं । और यह सब अकेले शिवा के लिए नहीं है । बल्कि यह लडाई पूरे मराठों के उध्दार, नहीं, पूरी हिन्दू जाति के उध्दार के लिए है ।' १३०

इसप्रकार उपन्यासकार शिवाजी को राष्ट्रभक्त के रूप में चित्रण करने

में पूर्णत: सफल हो गये । यादवचन्द्र जैन का वर्णन सर्वश्रेष्ठ और सुंदर बन गया हैं । उपन्यासकार शिवाजी को स्वातंत्र्य सैनिक मानते हैं ।

श्रेष्ठ शासक शिवराज ---

अत्याचार विरोधी ---

मुस्लिम बादशाह ने हिन्दु जातिपर मनमाना अत्याचार का आरंभ किया था । शिवाजी इस अत्याचार को मिटाना चाहते थे । इस युध्द का उद्देश्य भी यही था । उन्होंने अन्यायी शासन की समाप्ति करके न्यायपूर्ण शासन का निर्माण किया । शिवाजी अत्याचारियों के विरुध्द शस्त्र उठाना अपना कर्तव्य मानते हैं । यादवचन्द्र जैन लिखते हैं.....

` किसी की संपत्ति छिन जाती हैं । किसी की जमीन छिन जाती हैं । किसी का सम्मान सुरक्षित नहीं हैं । ऐसे अन्यायों के विरुध्द तो शस्त्र उठाना हमारा पुनीत कर्तव्य होना चाहिए । पावन धर्म होना चाहिए ।` [३१]

शिवाजी ने अत्याचार का विरोध किया । अत्याचार के विरुध्द तलवार उठाकर शिवाजीने स्वतंत्रता प्राप्त की हैं । इसी गुण को वे मानव का श्रेष्ठ गुण मानते हैं ।

धर्मनिरपेक्ष शासक --

शिवाजी धार्मिक थे, वे मुसलमानों की तरह धर्मांध एवं अत्याचारी नहीं थे । शिवाजीने कभी भी किसी जाति का विरोध नहीं किया । मगर उन्होंने सांप्रदायिक अत्याचारियों के विरुध्द संघर्ष किया था । शिवाजी धार्मिक जरूर थे, लेकिन उन्होंने कभी किसी मस्जिद को हानि नहीं पहुँचाई । भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं....

' इसमें क्या सन्देह ? कम-से-कम आपसे तो ज्यादा ही धार्मिक हैं । उसकी सेना ने तो कभी राह के किसी मस्जिद-दरगाह को नहीं ढहाया । किसी मौलवी और औलिया की रोपी नहीं उछाली ? धार्मिक तो वह .... ।' [१३२]

शिवाजी सांप्रदायिक नहीं थे । इस के बारे में यादवचन्द्र जैन लिखते हैं .....

' मैं सांप्रदायिक भी कदापि नहीं हूँ । हाँ मुझे सांप्रदायवादियों से मोर्चा अवश्य लेना पडता है । मैं तो पूर्णत: स्वतंत्रता के युध्द का एक सिपाही हूँ ... वैसा ही एक सैनिक जैसा किसी भी देश के स्वतंत्रता के युध्द का कोई सैनिक होगा ।' [१३३]

चतुर शासक --

उपन्यासकार ने शिवाजी की चतुराई का वर्णन किया है । शिवाजी ने अंग्रेज व्यापारियों की राजनीति को चातुर्य से पहचान लिया था । अंग्रेज व्यापार का ध्येय लोगों के सामने रखकर वे राजनीति का ध्येय साध्य करना चाहते थे । इस नीति को शिवाजी ने पहचान लिया और पन्हाला के घेरे में शत्रु की मदद करने के आरोप से अंग्रेज व्यापारियों को बंदी बनाया । कुछ साल बाद उन्हें छोड दिया जाता है । उस वक्त उनसे किसी भी युध्द में हिस्सा न लेने का वचन लेकर ही मुक्त किया जाता है ।

' गिरफ्तारी के दो साल बाद अंग्रेज व्यापारियों को छोड दिया गया था । उन्होंने माफी मांग ली थी । उनमें से एक दो बीमार भी पड गये थे । शिवाजी ने छोडने से पहले उनसे वचन लिया कि अब वे कभी किसी युध्द में भाग नहीं लेंगे और तोपखाने का उपयोग केवल अपनी सुरक्षा के लिए करेंगे ।' [१३४]

जब भी शिवाजी संकट का मुकाबला करने के लिए जाते थे तब वे अपने शासन की व्यवस्था करके ही जाते थे । अगर कहीं युध्द में मृत्यु भी हो गयी तो पिछे का राजकारोभार सुव्यवस्थित रुप से चलना चाहिए । अफजलखाँ से मिलने

BARODEKAR LIBRARY

जाते समय शिवाजी इसी प्रकार की व्यवस्था करके चले गये थे ।

` किले में भी पूरा प्रबंध किया गया । जाने के पूर्व शिवाजी ने आगे के राज्य-संचालन तक के लिये व्यवस्था कर दी, काश, कुछ गडबड हो जाये, उनकी मृत्यु हो जाये या वे कैद कर लिए जायें । अमुक - अमुक व्यक्ति अमुक विभाग का कार्य संचालन करते रहेंगे ।` [१३५]

मनुष्य परीक्षा ---

श्रेष्ठ शासक के पास एक आवश्यक गुण होता है - मनुष्य परीक्षा । अगर शासक के पास यह गुण होता है, तो शासक किसी काम के लिए योग्य व्यक्ति को नियुक्त करता है । अयोग्य व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण स्थानपर होने से शासन कमजोर होता है । अपने कार्य के लिए शिवाजी ने मावलों को इसी आधार पर चुना था ।

` शिवाजी की निगाह बचपन से ही बडी पैनी थी । आदमी को पहचान ने की तीखी नजर ने ही उन्हें बताया कि ये मावल ऐसे लोग हो सकते हैं जिनके दिलों को मोहब्बत और प्यार-मेल से जीत लिया गया तो कभी वे उन्हें ही .... शिवाजी को ... देवता के समान पूजेंगे ।` [१३६]

न्यायी शासक --

शिवाजी जब भी समाज को न्याय देते थे तब समाजयोग्य और प्रशंसायुक्त न्याय देते थे । शिवाजी न्याय के क्षेत्र में बेटा, माता, पिता और प्रजा सभी को समान मानकर न्याय देते थे । अबलाओं का रक्षण करना शासक का प्रधान कर्तव्य होता है । शिवाजी श्रेष्ठ शासक थे । वे कठोरता से शासन करते थे । एम.के.पाध्ये लिखते हैं .....

` हाँ, और उस सेनापति को जो उसे बन्दी बना कर लाया था जानती हो क्या इनाम मिला ?`

` क्या इनाम मिला, जागीर ? `

` मृत्यु दण्ड । ` [१३७]

प्रशंसा ---

शिवाजी ने श्रेष्ठ कार्य किया था । इसी कारण राजा जयसिंह भी शिवाजी की प्रशंसा करते हैं । राजा जयसिंह शिवाजी से संधि करते हैं । इस युध्द में राजा जयसिंह ही विजयी था । इस वक्त संधि करने से मुगल सम्राट का सेनापति जयसिंह से संदेह की बात करता है । उसवक्त राजा, जयसिंह स्वयं कहते हैं .....

` नहीं उदयसिंह, शिवाजी को साधारण व्यक्ति समझना भारी मूर्खता है ।` बात कहते हुए जयसिंह बोले, ` सारे भारतवर्ष में मुगल पताका फहरते हुए भी जिसने मुठ्ठी भर मराठों की सहायता से एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की, वह साधारण व्यक्ति नहीं, ईश्वर का दूत है । जिसने बत्तीस दुर्ग और चालीस लाख रुपये की आय का प्रदेश आलमगीर से छीन लिया, क्या उसकी गणना साधारण व्यक्तियों में की जा सकती है ? ` [१३८]

उपन्यासकार शिवाजी को श्रेष्ठ शासक मानते थे । शिवाजी के कार्य का वर्णन करते समय शिवाजी को अत्याचार विरोधी, धार्मिक उदारता, चातुर्य, मनुष्य परीक्षा और न्याय प्रियता आदि गुणों का वर्णन करते हैं । इन वर्णनों से शिवाजी का समर्थ, न्यायी और चतुर व्यक्तित्व हमारे सामने मूर्त होता है ।

कार्य --

सात सौ सालों तक अंधकार में रहनेवाले हिन्दुओं में उत्साह निर्माण करनेवाले शिवाजी प्रथम भारतीय वीर हैं । भारतीय हिन्दुओं का मुसलमान बादशाह ने मनमाना अत्याचार करते हुए गुलाम बनाकर रखा था । परिणाम - स्वरुप भारतीय वीरों का और जनता का मन निराश हो गया था । सुलतान बादशाह गरीब जनतापर अत्याचार कर रहे थे और वीर क्षात्रिय उनके दास बन

गये थे । उन्होंने घोर निराशा के अंधकार में डूबी हुई जनता को इस दास्ता से मुक्त करके विजयी बनाया । स्वातंत्र्य की शीतल हवा से जागृत किया । निष्प्राण हुए समाज में प्राण भर दिए । दास्ता से हतबल बने हिंदुओं को जागृत किया । यवनों को पराजित करके हिन्दुओं को विजयी बनाया । स्वराज्य की नवनिर्मिती कर दी । शिवाजी ने युगप्रवर्तन किया । शिवाजी के इस कार्य का वर्णन करते समय एम.के. पाध्ये लिखते हैं .....

` सारे भारत वर्ष में मुगल पताका फहरते हुए भी जिसने मुट्ठीभर मराठों की सहायता से एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की, वह साधारण व्यक्ति नहीं, ईश्वर का दूत है ।` [१३९]

यादवचंद्र जैन शिवाजी के कार्य का वर्णन करते समय लिखते हैं ....

` हिन्दवी स्वराज्य का अपना एक बडा स्वप्न आज साकार हुआ वे देख रहे थे ।` [१४०]

शिवाजी ने देश को गुलामी के बंधन से बाहर निकालकर स्वतंत्र रूपमें स्थापित किया । धर्म, नारी एवं न्याय की प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित किया ।

` जिन्दगी की आखिरी सॉस तक हमारा एक ही उद्देश्य रहेगा ... देश, धर्म, नारी एवं न्याय की प्रतिष्ठा के लिए दुश्मनों से लोहा लेना ।` [१४१]

उपन्यासकार शिवाजी के सामाजिक और राजनीतिक कार्य का ही वर्णन करते हैं । शिवाजी के सामाजिक कार्य का ही वर्णन सर्वश्रेष्ठ और सहृदयता से किया हैं । शिवाजी की सर्वांगीण प्रतिमा को उभारने में सफल नहीं बन सके ।

कीर्ति ---

शिवाजी ने शक्तिशाली यवनों को अपने बाहुबल से पराजित किया । अखंड दास्ता से हिन्दुओं को मुक्त किया । असंभव को संभव करके दिखाया । इसी कारण आज शिवाजी की कीर्ति विदेश में फैल गई हैं । आगरा से जब शिवाजी भाग जाते हैं तब उनकी कीर्ति और भी फैल जाती हैं ।

' शिवाजी को उडने के लिए पंख मिले हुए हैं,
इस अफवाह ने फिर से जोर पकडा । आगरा से पलायन की यह घटना इतनी अद्भुत और रोमांचक थी कि लोगों ने उसे जादुई कहानी का रूप दे डाला । देश के कोने-कोने में शिवाजी की बुध्दि और वीरता का दबदबा हो गया ।' [१४२]

शिवाजी के महान कार्य के कारण जनता में वे प्रिय थे । मंत्रि कवि कलश कहता है कि शिवाजी का शब्द जनता के लिए सब कुछ है । जनता की सारी सहानुभूति शिवाजी को प्राप्त है । शिवाजी जनप्रिय होने के कारण वे जनता के लोकनायक बन गये ।

' आप भूल कर रहे हैं । जनता में छत्रपति शिवाजी का अत्यंत सम्मानपूर्ण स्थान है ।' [१४३]

मुगलों की सेवा करनेवाले राजपूत भी शिवाजी के श्रेष्ठ कार्य से प्रभावित हो जाते हैं । जयसिंह उदयसिंह से कहते हैं कि शिवाजी साधारण व्यक्ति नहीं, ईश्वर का दूत है ।

' सारे भारत वर्ष में मुगल पताका फहरते हुए भी जिसने मुट्ठीभर मराठों की सहायता से एक स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की, वह साधारण व्यक्ति नहीं, ईश्वर का दूत है ।' [१४४]

उपन्यासकार ने शिवाजी के सामाजिक और राजकीय कार्य का वर्णन सुंदर ढंग से किया है । फिर भी यह वर्णन सामान्य ही है ।

संदर्भ

१) परमेश्वर प्रसाद सिंह ,` छत्रपति शिवाजी` पृ.१७,दिल्ली,१९७० ई.

२) डा.भगवतीशरण मिश्र` पहला सूरज `, पृ.७६,दिल्ली,१९८८ ई.

३) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ.१०६,दिल्ली,१९९९ ई.

४) भगवतीशरण मिश्र - पहला सूरज`, पृ.१४५,दिल्ली,१९८८ ई.

५) यादवचन्द्र जैन ,` शिवनेर केसरी`, पृ.२२०,दिल्ली,१९९९ ई.

६) एम.के.पाध्ये -` रिहाई `, पृ.१,देहली.

७) मनहर चौहान,` सूर्य का रक्त`, - पृ.१३६,दिल्ली,१९७२ ई.

८) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.९,दिल्ली,१९७१ ई.

९) व्ही.के.मोरे -` हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी के चरित्र का मूल्यांकन` ,शोध-प्रबन्ध,१९७५ ई.

१०) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.४३,दिल्ली,१९७१ ई.

११) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ.१७५,दिल्ली,१९९९ ई.

१२) परमेश्वरप्रसाद सिंह,` छत्रपति शिवाजी`, पृ.५२,दिल्ली,१९७० ई.

१३) - वही - पृ.९६,

१४) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.८६-८७, दिल्ली,१९७१ ई.

१५) - वही - पृ.९८

१६) गोविंद त्रिगुणायत ,` शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत` प्रथम भाग, पृ.२०२,दिल्ली,१९६२ ई.

१७) रणवीर रांग्रा ,` हिंदी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास` पृ.७१-७२,दिल्ली,१९६१ ई.

१८) व्ही.के.मोरे,` हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी के चरित्र का मूल्यांकन`, शोध प्रबंध, १९७५ ई.

१९) यादवचंद्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ.१८१-१८२,दिल्ली,१९९९ ई.

२०) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.९४,दिल्ली,१९६७ ई.

२१) परमेश्वर प्रसाद सिंह,` छत्रपति शिवाजी`, पृ.९६,दिल्ली,१९७० ई.

२२) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.८५,दिल्ली,१९७१ ई.

२३) - वही- पृ.९८

२४) मनहर चौहान ,` सूर्य का रक्त`, पृ.१३४,दिल्ली, १९७२ ई.

२५) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.१५५,दिल्ली, १९६७ ई.

२६) परमेश्वर प्रसाद सिंह,` छत्रपति शिवाजी`, पृ.८९,दिल्ली,१९७० ई.

२७) - वही - पृ.८९

२८) - वही - पृ.९५

२९) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ.१९७,दिल्ली,१९९९ ई.

३०) - वही - पृ.२३३

३१) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.७३, दिल्ली,१९७१ ई.

३२) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`,` पृ.६१-६२,दिल्ली,१९९९ ई.

३३) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.१९८, १९५९ ई.

३४) - वही - पृ.१४९

३५) व्ही.के. मोरे, `हिंदी साहित्य में वर्णित छत्रपति शिवाजी के चरित्र का मूल्यांकन`, शोध प्रबंध, १९७५ ई.

३६) यादवचंद्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.१०२, दिल्ली, १९५९ ई.

३७) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ.७६, दिल्ली, १९७१ ई.

३८) यादवचंद्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.६१, दिल्ली, १९५९ ई.

३९) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ.५७-५८, दिल्ली, १९७० ई.

४०) यादवचंद्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.२१४, दिल्ली, १९५९ ई.

४१) - वही - पृ.१२६

४२) - वही - पृ.२१०

४३) - वही- पृ.२५

४४) - वही - पृ.२४

४५) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ.४६, दिल्ली, १९७० ई.

४६) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.९३-९४, दिल्ली, १९५९ ई.

४७) परमेश्वरप्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ.५१, दिल्ली, १९७० ई.

४८) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ.६५, दिल्ली, १९५९ ई.

४९) - वही - पृ.१०२

५०) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ' सह्याद्रि की चट्टानें', पृ. १५-१६, दिल्ली, १९६७ ई.

५१) यादवचन्द्र जैन, ' शिवनेर केसरी', पृ. १०६, दिल्ली, १९५९ ई.

५२) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ' सह्याद्रि की चट्टानें', पृ. ९०-९१, दिल्ली, १९६७ ई.

५३) परमेश्वरप्रसाद सिंह, ' छत्रपति शिवाजी', पृ. ९०-९१, दिल्ली, १९७० ई.

५४) भगवतीशरण मिश्र, ' पहला सूरज', पृ. २०६, दिल्ली, १९८८ ई.

५५) मनहर चौहान, ' सूर्य का रक्त', पृ. १३१, दिल्ली, १९७२ ई.

५६) यादवचन्द्र जैन, ' शिवनेर केसरी', पृ. १९८, दिल्ली, १९५९ ई.

५७) परमेश्वरप्रसाद सिंह, ' छत्रपति शिवाजी', पृ. १०७, दिल्ली, १९७० ई.

५८) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ' सह्याद्रि की चट्टानें', पृ. १३०, दिल्ली, १९६७ ई.

५९) मनहर चौहान, ' जयभवानी', पृ. ८१, दिल्ली, १९७१ ई.

६०) परमेश्वरप्रसाद सिंह, ' छत्रपति शिवाजी', पृ. ९७, दिल्ली, १९७० ई.

६१) मनहर चौहान, ' जयभवानी', पृ. ४५, दिल्ली, १९७१ ई.

६२) भगवतीशरण मिश्र, ' पहला सूरज', पृ. १७७, दिल्ली, १९८८ ई.

६३) मनहर चौहान, 'जयभवानी', पृ. २५, दिल्ली, १९७१ ई.

६४) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ' सह्याद्रि की चट्टानें', पृ. ४७, दिल्ली, १९६७ ई.

६५) परमेश्वर प्रसाद सिंह, ' छत्रपति शिवाजी', पृ. ५२, दिल्ली, १९७० ई.

६६) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ.१४३,दिल्ली,१९५९ ई.

६७) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.११०-१११, दिल्ली, १९६७ ई.

६८) - वही - पृ.१११ ,

६९) भगवतीशरण मिश्र,` पहला सूरज`, पृ. २८६-२८७,दिल्ली,१९८८ ई.

७०) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.१११, दिल्ली,१९६७ ई.

७१) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ. २२५,दिल्ली,१९५९ ई.

७२) परमेश्वर प्रसाद सिंह,` छत्रपति शिवाजी`, पृ.११७-११८,दिल्ली, १९७० ई.

७३) मनहर चौहान,` जयभवानी`, पृ.८६-८७,दिल्ली,१९७१ ई.

७४) एम.के.पाध्ये,` रिहाई `, पृ.४७,देहली

७५) परमेश्वर प्रसाद सिंह,` छत्रपति शिवाजी`, पृ.५२, दिल्ली,१९७० ई.

७६) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.९४, दिल्ली,१९६७ ई.

७७) यादवचन्द्र जैन,` शिवनेर केसरी`, पृ. २४५,दिल्ली,१९५९ ई.

७८) आचार्य चतुरसेन शास्त्री,` सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ.९१, दिल्ली,१९६७ ई.

७९) एम.के.पाध्ये,` रिहाई`, पृ.७,दिहली

८०) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, `सह्याद्रि की चट्टानें` पृ. २०, दिल्ली, १९६७ ई.

८१) - वही - पृ. ६३

८२) परमेश्वरप्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. १८, दिल्ली, १९७० ई.

८३) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ७७, दिल्ली, १९७१ ई.

८४) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, `सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ. ९५, दिल्ली, १९६७ ई.

८५) एम. के. पाध्ये, `रिहाई`, पृ. ५५, देहली

८६) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २४७-२४८, दिल्ली, १९५९ ई.

८७) -वही- दो शब्द

८८) भगवताशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. २२९, दिल्ली, १९८८ ई.

८९) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ४२, दिल्ली, १९७१ ई.

९०) - वही- पृ. ६१

९१) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २१६, दिल्ली, १९५९ ई.

९२) - वही - पृ. १७९

९३) - वही- पृ. १८२

९४) भगवताशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. २१२, दिल्ली, १९८८ ई.

९५) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. ९७, दिल्ली, १९७० ई.

९६) भगवतीशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. २४५, दिल्ली, १९८८ ई.

९७) यादवेन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २१७, दिल्ली, १९५९ ई.

९८) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ६१, दिल्ली, १९७१ ई.

९९) भगवतीशरण मिश्र, `पहला सूरज,` पृ. २७३, दिल्ली, १९८८ ई.

१००) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ८२, दिल्ली, १९७१ ई.

१०१) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. १३४, दिल्ली, १९७० ई.

१०२) यादवेन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २११, दिल्ली, १९५९ ई.

१०३) - वही - पृ. १७६

१०४) - वही - पृ. २१८

१०५) भगवतीशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. ३००, दिल्ली, १९८८ ई.

१०६) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपतिशिवाजी`, पृ. १२६, दिल्ली, १९७० ई.

१०७) यादवेन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २४१, दिल्ली, १९५९ ई.

१०८) - वही - पृ. २४२

१०९) आचार्य चतुरसेन शास्त्री, `सह्याद्रि की चट्टानें`, पृ. ११८, दिल्ली, १९६७ ई.

११०) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. ८६, दिल्ली, १९७० ई.

१११) भगवतीशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. १७७, दिल्ली, १९८८ ई.

११२) - वही - पृ. २५१

११३) एम. के. पाध्ये, `रिहाई`, पृ. ३९, देहली

११४) मनहर चौहान, `सूर्य का रक्त`, पृ. ६५, दिल्ली, १९७२ ई.

११५) - वही - पृ. ४८

११६) एम.के.पाध्ये, `रिहाई`, पृ. ३२, देहली

११७) परमेश्वरप्रसाद सिंह, छत्रपति शिवाजी`, पृ. ७८, दिल्ली, १९७० ई.

११८) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. १७६, दिल्ली, १९५९ ई.

११९) एम.के.पाध्ये, `रिहाई`, पृ. ५७, देहली,

१२०) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. १४६, दिल्ली, १९५९ ई.

१२१) परमेश्वरप्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. ४६, दिल्ली, १९७० ई.

१२२) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ७४, दिल्ली, १९७१ ई.

१२३) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. १२०, दिल्ली, १९५९ ई.

१२४) - वही - पृ. ११९

१२५) - वही - पृ. २५०

१२६) परमेश्वर प्रसाद सिंह, `छत्रपति शिवाजी`, पृ. ४७, दिल्ली, १९७० ई.

१२७) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. २४६, दिल्ली, १९५९ ई.

१२८) - वही - पृ. २४७

१२९) मनहर चौहान, `जयभवानी`, पृ. ११२, दिल्ली, १९७१ ई.

१३०) डा. भगवतीशरण मिश्र, `पहला सूरज`, पृ. २०५, दिल्ली, १९८८ ई.

१३१) यादवचन्द्र जैन, `शिवनेर केसरी`, पृ. ११८, दिल्ली, १९५९ ई.

१३२) भगवतीशरण मिश्र, ` पहला सूरज `, पृ.१९९, दिल्ली, १९८८ ई.

१३३) यादवचन्द्र जैन, ` शिवनेर केसरी `, पृ.२४७, दिल्ली, १९५९ ई.

१३४) मनहर चौहान, ` जयभवानी `, पृ.५९, दिल्ली, १९७१ ई.

१३५) यादवचन्द्र जैन, ` शिवनेर केसरी `, पृ.१९६, दिल्ली, १९५९ ई.

१३६) - वही - पृ.११२

१३७) एम.के.पाध्ये, ` रिहाई `, पृ.२२, देहली

१३८) - वही - पृ.३

१३९) - वही - पृ.३

१४०) यादवचन्द्र जैन, ` शिवनेर केसरी `, पृ.२५४, दिल्ली, १९५९ ई.

१४१) परमेश्वर प्रसाद सिंह, ` छत्रपति शिवाजी `, पृ.८०, दिल्ली, १९७० ई.

१४२) मनहर चौहान, ` जयभवानी `, पृ.९८, दिल्ली, १९७१ ई.

१४३) मनहर चौहान, ` सूर्य का रक्त `, पृ.१४६, दिल्ली, १९७२ ई.

१४४) एम.के.पाध्ये, ` रिहाई `, पृ.३, देहली